डाक पंजीयन नं. 99/2021-23

E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com

website:www.aadhuniksamachar.com

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

आधुनिक समाचार

PG-8

सिनेमा:-2023 में गर्दा उड़ाएंगी हिंदी में रिलीज हो रही ये तमिल फिल्में, बॉलीवुड की डूबेगी नैया

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

वर्ष -09 अंक -34 | प्रयागराज ,शनिवार, 08, अप्रैल, 2023 | पृष्ठ- 8 | मूल्य : 2.00 रूपये

संक्षिप्त समाचार

आधार से वोटर आइडी लिंक करना अभी शुरू नहीं किरण रिजिजू

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। केंद्रीय कानून मंत्री किरण रिजिजू ने राज्यसभा को बताया कि आधार के ब्योरे को वोटर आइडी कार्ड से लिंक करना अभी शुरू नहीं हुआ है। उन्होंने बताया कि यह कवायद प्रक्रिया आधारित होगी और इस प्रस्तावित लिंक के लिए कोई समयसीमा निर्धारित नहीं की जाएगी।रिजिजू ने गुरुवार को एक लिखित जवाब में कहा कि जिन लोगों ने आधार के ब्योरे से मतदाता पहचान पत्र को लिंक नहीं किया है, उनके नाम वोटर आइडी से नहीं हटाए जाएंगे। जनप्रतिनिधि कानून, 1950 की धारा 23 में चुनाव कानून (संशोधन) अधिनियम, 2021 के बाद चुनाव पंजीकरण अधिकारी को मौजूदा या भावी मतदाता को पहचान प्रदान करने के लिए स्वैच्छिक तरीके से आधार नंबर प्रदान करना होता है। चुनाव आयोग ने सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में एक अगस्त, 2022 से मौजूदा और भावी मतदाताओं का आधार नंबर एकत्र करने के लिए यह कार्यक्रम शुरू किया था। उन्होंने बताया कि फोटोयुक्त मतदाता पहचान पत्र को आधार से जोड़ना प्रक्रिया से प्रेरित है और इसे किसी समयसीमा में नहीं बांधा गया है।

तेलंगाना भाजपा अध्यक्ष बंडी संजय कुमार जेल से रिहा, पेपर लीक केस में हुए थे गिरफ्तार

(आधुनिक समाचार सेवा)

हैदराबाद। तेलंगाना भाजपा के अध्यक्ष बंडी संजय कुमार को करीमनगर जेल से रिहा कर दिया गया है। एसएससी पेपर लीक मामले में बुधवार को गिरफ्तार हुए बंडी संजय को गुरुवार को वारंगल कोर्ट ने जमानत दे दी थी। जमानत मिलने के बाद उन्हें जेल से रिहा कर दिया गया है।बंडी संजय की जमानत याचिका को लेकर गुरुवार को लंबी सुनवाई चली। हनमकोंडा के अतिरिक्त प्रथम श्रेणी मजिस्ट्रेट ने बीजेपी नेता को कुछ शर्तों के साथ जमानत पर रिहा करने का आदेश दिया। बीजेपी की लीगल सेल टीम की ओर से दाखिल की गई जमानत याचिका पर कोर्ट ने संजय कुमार को 20 हजार रुपये के निजी मुचलके पर जमानत दी।

पीएम मोदी की सामाजिक न्याय टिप्पणी पर सिब्बल का कटाक्ष, कहा- अमीर और अमीर होता जाता है, गरीब और गरीब

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। राज्यसभा सांसद कपिल सिब्बल ने शुक्रवार को सामाजिक न्याय के प्रति भाजपा की प्रतिबद्धता पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की टिप्पणी पर कटाक्ष किया। उन्होंने दावा किया कि इस सरकार के तहत अमीर अमीर हो जाते हैं और गरीब और अधिक गरीब हो जाते हैं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुरुवार को पार्टी के 44वें स्थापना दिवस पर भाजपा के सदस्यो संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने मुफ्त राशन योजना, स्वास्थ्य बीमा और अन्य कल्याणकारी उपायों का हवाला देते हुए कहा कि सामाजिक न्याय भाजपा के लिए विश्वास का एक लेख था, जबकि अन्य दलों ने समाज की मदद किए बिना विशेष परिवारों के हितों को आगे बढ़ाने के लिए तख्ती का इस्तेमाल किया। प्रधानमंत्री ने कहा था कि जहां भाजपा ने सोचा और बड़ा सपना देखा और फिर इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए खुद को समर्पित करने के लिए तैयार हो गई, वहीं विपक्षी दल छोटे लक्ष्य निर्धारित कर सकते थे और छोटे लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एक-दूसरे की पीठ थपथपा सकते थे। एक ट्वीट में सिब्बल ने कहा कि पीएमः 'बीजेपी सामाजिक न्याय के लिए जीती है और अक्षरशः इसका पालन करती है।' तथ्यः 1) 2012-2021 से बनाई गई संपत्ति का 40 प्रतिशत केवल 1 प्रतिशत आबादी के पास गया 2) 2022 में अडानी की संपत्ति में 46 प्रतिशत की वृद्धि हुई 3) 64 प्रतिशत जीएसटी नीचे के 50 प्रतिशत से आया; 4 फीसदी टॉप 10 फीसदी से आए।यूपीए 1 और 2 के दौरान केंद्रीय मंत्री रहे सिब्बल ने पिछले साल मई में कांग्रेस छोड़ दी थी और समाजवादी पार्टी के समर्थन से एक स्वतंत्र सदस्य के रूप में राज्यसभा के लिए चुने गए थे। उन्होंने हाल ही में अन्याय से लड़ने के उद्देश्य से एक गैर-चुनावी मंच 'इंसाफ' शुरू किया है।

भारत का नोटिस मिलते ही पाकिस्तान ने घुटने टेके

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली।भारत सरकार ने इस बात की पुष्टि की है कि सीमा पार नदियों के प्रबंधन के लिए 1960 की सिंधु जल संधि में संशोधन की मांग करने वाले जनवरी में भेजे गए पत्र का पाकिस्तान ने जवाब दिया है। इस बात की जानकारी शुक्रवार की दी गई है। विश्व बैंक की ओर से भारत और पाकिस्तान को जम्मु-कश्मीर में किशनगंगा और रातले पनबिजली परियोजनाओं पर पाकिस्तान की आपत्तियों को दूर करने के लिए एक पारस्परिक रूप से सहमत तरीका खोजने के लिए कहा गया था इसके बावजूद, इस्लामाबाद ने भारत के साथ किसी भी तरह के मुद्दे पर चर्चा करने से इनकार कर दिया था। इसके कारण भारत को पाकिस्तान के लिए एक नोटिस तैयार करना पड़ा था।बुधवार को पाकिस्तान ने कहा कि वह सद्भावना से संधि लागू करने के लिए प्रतिबद्ध है। वहीं, भारतीय विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अरिंदम बागची ने कहा, ठहम अभी पत्र की जांच कर रहे हैं। भारत ने जनवरी में 1960 के सिंधु जल समझौते में संशोधन के लिए संधि के अनुच्छेर्द घ(3) के तहत पाकिस्तान को एक नोटिस जारी किया था। दरअसल, भारत चाहता था कि इस मुद्दे को किसी विशेषज्ञ के पास भेजा जाए, लेकिन पाकिस्तान इससे लगातार इनकार कर रहा था। 19 सितंबर, 1960 को भारत और पाकिस्तान के बीच सिंधु जल संधि हुई थी। संधि के तहत सतलुज, व्यास और रावी नदियों का पानी भारत के हिस्से में आता है और सिंधु, झेलम और चेनाब नदी का पानी पाकिस्तान के हिस्से में आता है। आपको बताते चलें, इस समझौते के मुताबिक, भारत और पाकिस्तान के जल आयुक्त साल में दो बार मुलाकात करते हैं।

मुस्लिम पक्ष ने की ज्ञानवापी मस्जिद परिसर में वजू और शौचालय की व्यवस्था कराने की मांग

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। बनारस में ज्ञानवापी मस्जिद मामले में मुस्लिम पक्ष ने सुप्रीम कोर्ट में अर्जी दाखिल कर रमजान के दौरान मस्जिद आने वाले नमाजियों को हो रही परेशानियों की दुहाई देते हुए वजू और शौचालय की व्यवस्था कराने की मांग की है। मामले में सुप्रीम कोर्ट के 14 अप्रैल को सुनवाई करने की उम्मीद है। गुरुवार की सुबह अंजुमन इंतजामिया मस्जिद कमेटी वाराणसी की ओर से पेश वरिष्ठ वकील हुजैफा अहमदी ने प्रधान न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली पीठ के समक्ष मामले का जिक्र करते हुए जल्द सुनवाई की मांग की। अहमदी ने कहा कि रमजान चल रहे हैं मस्जिद में वजू और शौचालय की व्यवस्था नहीं है जिसके कारण वहां आने वाले नमाजियों को काफी परेशानी हो रही है। कोर्ट 14 अप्रैल को इस मामले में सुनवाई करेगा। दाखिल अर्जी में सुप्रीम कोर्ट के 17 मई 2022 और 20 मई 2022 के अंतरिम आदेश का हवाला दिया गया है जिसमें सुप्रीम कोर्ट ने सर्वे के दौरान ज्ञानवापी मस्जिद परिसर में मिले शिवलिंग की सुरक्षा सुनिश्चित करने का आदेश दिया था और साथ ही कहा था कि इससे मुस्लिमों के मस्जिद जाने और नमाज पढ़ने में कोई बाधा नहीं होनी चाहिए। सुप्रीम कोर्ट ने 20 मई के आदेश में यह भी कहा था कि डिस्ट्रिक मजिस्ट्रेट धार्मिक रीतीरिवाज और वजू की व्यवस्था कराएंगे। अर्जी में कहा गया है कि कोर्ट के आदेश पर जहां शिवलिंग मिला है जिसे मुस्लिम पक्ष फव्वारा मानता है, वहां का क्षेत्र सील है। उसके साथ लगा हुआ शौचालय भी सील है। अर्जी में सुप्रीम कोर्ट के 20 मई 2022 के आदेश के मुताबिक वजू और शौचालय की व्यवस्था कराने की मांग की गई है।

नवजोत सिंह सिद्धू ने राहुल और प्रियंका गांधी से की मुलाकात

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। कांग्रेस नेता नवजोत सिंह सिद्धू ने गुरुवार को राष्ट्रीय राजधानी में पूर्व पार्टी अध्यक्ष राहुल गांधी और प्रियंका गांधी वाड्रा से मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने कहा कि उनकी अपने नेताओं और पंजाब राज्य के प्रति उनकी प्रतिबद्धता अभी भी दृढ़ है। सुप्रीम कोर्ट ने नवजोत सिंह सिद्धू को एक तीन दशक पुराने सड़क हिंसा के मामले में एक साल की जेल सजा सुनाई थी, जिसके बाद वह पंजाब के पटियाला केंद्रीय जेल से 1 अप्रैल को रिहा हुआ था। सिद्धू ने राहुल गांधी से पहली बार मिला था। सिद्धू ने ट्वीट करते हुए कहा, ठआज नई दिल्ली में राहुल जी और प्रियंका जी से मुलाकात हुई। आप मुझे कैद कर सकते हो, धमका सकते हो, मेरे सभी वित्तीय खातों को अवरुद्ध कर सकते हो लेकिन मेरी पंजाब और मेरे नेताओं के प्रति मेरी प्रतिबद्धता कभी हिलेगी नहीं।

बता दें, सिद्धू को पिछले साल मई में सुप्रीम कोर्ट द्वारा दंडित किया गया था, उन्होंने एक गलतफहमी के चलते गुरणाम सिंह को मारने के आरोप में एक साल की सजा दी गई थी। जेल से बाहर निकलते ही, सिद्धू ने केंद्र सरकार पर निशाना साधते हुए कहा था कि लोकतंत्र जंजीरों में बंधा हुआ है और पंजाब में राष्ट्रपति शासन लाने की साजिश है। उन्होंने कहा, लोकतंत्र जंजीरों में बंधा हुआ है। अभी देश में लोकतंत्र जैसा कुछ भी नहीं है। पंजाब में राष्ट्रपति शासन लाने की साजिश की जा रही है। अल्पसंख्यकों का निशाना बनाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि यदि आप पंजाब को कमजोर करने की कोशिश करते हैं, तो आप खुद कमजोर हो जाएंगे। वहीं कांग्रेस नेता राहुल गांधी का समर्थन करते हुए कहा कि वायनाड पूर्व सांसद केंद्र सरकार को हिला देंगे। उन्होंने कहा कि जब भी इस देश में तानाशाही आई है, तब हमेशा एक क्रांति भी आई है और इस बार, उस क्रांति का नाम राहुल गांधी है।

एक्शन मोड में केंद्र सरकार, आज राज्यों के स्वास्थ्य मंत्रियों के साथ बैठक करेंगे मनसुख मांडविया

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। देश में गुरुवार को 195 दिनों के बाद कोरोना के 5,335 नए मामले दर्ज किए गए हैं। पिछले साल 23 सितंबर को 5,383 मामले दर्ज किए गए थे। कोरोना मामलों की इसी बढ़ती रफ्तार को देखते हुए अब केंद्र सरकार एक्शन मोड में आ गई है। इसके चलते केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मांडविया आज दोपहर सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के स्वास्थ्य मंत्रियों के साथ समीक्षा बैठक की अध्यक्षता करेंगे। स्वास्थ्य राज्य मंत्री डॉ. भारती प्रवीन पवार ने बताया कि कोरोना के बढ़ते संक्रमण को देखते केंद्र ने कोविड-19 पर राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों को नियमित रूप से दिशा-निर्देश जारी किए हैं और इसी को देखते हुआ आज बैठक रखी गई है। वहीं, पीएम मोदी भी कोरोना को लेकर पहले सभी राज्यों के साथ समीक्षा बैठक कर चुके हैं। देश में चार अप्रैल को कोरोना के 3038 और पांच अप्रैल को 4,435 नए मामले मिले थे। इंसाकोग के अनुसार भारत में कोरोना संक्रमण में एक्सबीबी.1.16 वैरिएंट को देखा गया है। संक्रमण में 38.2 प्रतिशत एक्सबीबी.1.16 वैरिएंट है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने गुरुवार को बताया कि सक्रिय मामलों की संख्या बढ़कर 25,587 हो गई है। कोरोना से 13 लोगों की मौत के बाद मृतकों की संख्या बढ़कर 5,30,929 हो गई है। कोरोना के चलते कर्नाटक और महाराष्ट्र से दो-दो लोगों की मौतें भी हुई हैं। केरल और पंजाब से एक-एक मौत की सूचना मिली है। इसके अलावा केरल ने कोरोना से जान गंवाने वाले मरीजों के आंकड़ों का पुनर्मिलान करने के बाद मृतकों की सूची में सात मामले जोड़े हैं। बता दें कि इस बीमारी से अब तक देश में 4,47,39,054 लोग संक्रमित हो चुके हैं। सक्रिय मामलों की संख्या कुल संक्रमितों का 0.06 प्रतिशत है। इस दौरान दैनिक संक्रमण दर 3.32 प्रतिशत और साप्ताहिक संक्रमण दर 2.89 प्रतिशत दर्ज की गई। कोरोना से ठीक होने की राष्ट्रीय दर 98.75 प्रतिशत दर्ज की गई है। मृत्यु दर 1.19 प्रतिशत है। राष्ट्रव्यापी कोरोना टीकाकरण अभियान के तहत देश में अब तक कोरोनारोधी टीके की 220.66 करोड़ डोज दी जा चुकी हैं।

तेलंगाना भाजपा के अध्यक्ष बंदी संजय कुमार को मिली जमानत, कोर्ट ने कहा- गवाहों को नहीं धमकाए

(आधुनिक समाचार सेवा)

गेहैदराबाद। तेलंगाना एसएससी पेपर लीक मामले में गिरफ्तार भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष बंदी संजय कुमार को गुरुवार को वारंगल कोर्ट ने जमानत दे दी। जमानत याचिका पर मैराथन सुनवाई के बाद हनमकोंडा के अतिरिक्त प्रथम श्रेणी मजिस्ट्रेट ने गुरुवार रात संजय को कुछ शर्तों के साथ जमानत पर रिहा करने का आदेश दिया। कोर्ट ने जमानत देते हुए शर्त लगाई है कि बंदी संजय देश छोड़कर नहीं जाएंगे, जांच में सहयोग करेंगे और गवाहों को नहीं धमकाएंगे। उन्हें बुधवार को गिरफ्तार किया गया था। इससे पहले उन्हें बुधवार और गुरुवार कि दरमियान रात को पुलिस ने हिरासत में लिया था। भाजपा की लीगल सेल टीम की ओर से दाखिल की गई जमानत याचिका पर कोर्ट ने संजय कुमार को 20 हजार रुपये के निजी मुचलके पर जमानत दी। उन्हें शुक्रवार को जेल से रिहा करने का कोर्ट ने आदेश दिया है। हाई कोर्ट में 10 अप्रैल को होगी सुनवाई इससे पहले तेलंगाना हाई कोर्ट ने कक्षा 10 के प्रश्न पत्र लीक मामले में बंदी संजय कुमार की न्यायिक रिमांड को चुनौती देने वाली याचिका पर सुनवाई 10 अप्रैल तक के लिए स्थगित कर दी थी।मुख्य न्यायाधीश उज्जल भुइयां की अध्यक्षता वाली पीठ ने संजय के वकील द्वारा दायर याचिका पर सुनवाई की और पुलिस को जवाबी शपथपत्र दायर करने का निर्देश दिया है। कोर्ट ने बंदी संजय से जमानत के लिए संबंधित न्यायालय का रुख करने को कहा था।

टकराव के चलते पूरी तरह धुला संसद का बजट सत्र

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। संसद के बजट सत्र का दूसरा चरण जब 13 मार्च से शुरू हुआ तो फिर वह अखाड़ा बना ही रहा। सत्ता पक्ष और विपक्षी दलों के बीच खास तौर दो मुद्दों ने ऐसा गतिरोध खड़ा कर दिया कि बजट पर चर्चा वाला महत्वपूर्ण सत्र भी पूरी तरह से धुल गया। अंतिम दिन गुरुवार को भी हंगामे के बीच संसद सत्र अनिश्चितकाल के लिए स्थगित किए जाने के बाद यह आंकड़े देश की सबसे बड़ी पंचायत की तस्वीर दिखाते हैं कि लोकसभा 45 घंटे तो राज्यसभा की कार्यवाही मात्र 31 घंटे ही चल सकी। पिछले कुछ सत्रों से लोकसभा में कामकाज लगभग सौ फीसद हुआ करता था जो इस बार 35 फीसद से भी कम पर अटक गया। दरअसल, दूसरे चरण में कामकाज महज 5.29 फीसद हुआ। संसद का बजट सत्र 31 जनवरी को शुरू हुआ। पहला चरण 13 फरवरी तक चला, जबकि 13 मार्च से शुरू हुए दूसरे चरण का अंतिम दिन गुरुवार को था। जिस तरह से सत्ता पक्ष और विपक्षी दल अपने-अपने मुद्दे पर अटके थे, उससे संकेत मिल गया था कि यह गतिरोध खत्म नहीं होगा और बजट सत्र का धुलना तय है। हुआ भी यही। हर दिन लोकसभा और राज्यसभा के दृश्य 'रीप्ले' की तरह ही दिखाई दिए। वहीं, कांग्रेस की ओर से अदाणी मामले पर जांच के लिए संयुक्त संसदीय समिति गठित करने की मांग और नारेबाजी। इधर, भाजपा सदस्यों द्वारा राहुल गांधी से विदेश में भारतीय लोकतंत्र की आलोचना के लिए माफी की मांग। दोनों ओर से आरोप-प्रत्यारोप, हंगामा-नारेबाजी और अंततः कार्यवाही स्थगित। आखिरी दिन लोकसभा की कार्यवाही छह मिनट में स्थगित इसी तरह सत्र के आखिरी दिन लोकसभा की कार्यवाही लगभग छह मिनट में ही स्थगित कर दी गई। राज्यसभा की कार्यवाही भी इन्हीं मुद्दों पर पहले सुबह कुछ मिनट में स्थगित की गई। फिर दोपहर में दो बजे जब दोबारा कार्यवाही शुरू हुई तो सभापति जगदीप धनखड़ की ओर से सदस्यों की जानकारी दी गई कि सदन की प्रक्रिया की वीडियोग्राफी करने के मामले में कांग्रेस सांसद रजनी अशोक राव पाटिल की निलंबन अविध बजट सत्र के बाद तक के लिए बढ़ा दी गई है।इस पर भी टकराव व हंगामा शुरू हो गया, जिसके बाद कार्यवाही को अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दिया गया। बजट सत्र के हश्र का निचोड़ यह है कि लोकसभा की कार्यवाही कुल 133.6 घंटे चलना निर्धारित किया गया था, लेकिन हर दिन हंगामा और स्थगन के चलते वह सिर्फ 45 घंटे (34.28 प्रतिशत) ही चल सकी। मतलब कि 88 घंटे हंगामे की भेंट चढ़ गए। राज्यसभा की कार्यवाही 31 घंटे चली वहीं, राज्यसभा की कार्यवाही के लिए 130 घंटे निर्धारित थे, लेकिन चली मात्र 31 घंटे (24 प्रतिशत)। उच्च सभा के 99 घंटे पक्ष-विपक्ष का टकराव लील गया। संसद के आंकड़ों के मुताबिक, लोकसभा में सिर्फ 4.32 घंटे ही प्रश्न लिए जा सके, जबकि राज्यसभा की स्थिति और खराब रही। वहां सिर्फ 1.85 घंटे ही प्रश्नकाल चल सका।लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने बताया कि आम बजट पर 14.45 घंटे तक चर्चा चली, जिसमें 145 सदस्यों ने भाग लिया। वहीं, राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव में 145 सांसदों ने अपने विचार रखे। यह चर्चा 13 घंटे 44 मिनट चली। लोकसभा में कुल आठ प्रस्ताव रखे गए, जिनमें से छह पारित हो गए।

चीन ने दो भारतीय पत्रकारों के प्रवेश पर लगाई रोक, भारत ने जताई नाराजगी तो ड्रैगन ने किया फैसले का बचाव

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। चीन ने दो भारतीय पत्रकारों के प्रवेश पर रोक लगा दी है। दोनों पत्रकारों के वीजा को फ्रीज कर दिया गया है। उनका वीजा नहीं बढ़ाया गया है। दोनों पत्रकार छुट्टी पर भारत आए थे। जब वापस जाने लगे तो चीन के विदेश मंत्रालय के अधिकारियों ने प्रसार भारती के प्रतिनिधि अंशुमन मिश्रा और दक्षिण भारत के प्रमुख अंग्रेजी समाचारपत्र के पत्रकार को मंगलवार को सूचित किया कि उनके वीजा फ्रीज हैं। वे चीन वापस नहीं आ सकते। भारत ने गुरुवार को उम्मीद जताई कि भारतीय पत्रकारों को चीन में कोई परेशानी नहीं होगी। चीन के अधिकारी चीन में भारतीय पत्रकारों की मौजूदगी को सुगम बनाने में मदद करेंगे। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अरिंदम बागची ने कहा, ''चीन के कई ऐसे पत्रकार हैं, जिनके पास पत्रकारिता के लिए भारतीय वीजा हैं। चीनी पत्रकारों को भारत में कोई कठिनाई नहीं होती है। चीन में काम करने वाले भारतीय पत्रकारों के संबंध में हम आशा करते हैं कि चीन के अधिकारी अपने देश में भारतीय पत्रकारों की निरंतर उपस्थिति और रिपोर्टिंग के लिए सुविधा देंगे।उन्होंने कहा कि हम इस संबंध में चीनी अधिकारियों के संपर्क में हैं। इस बीच चीन ने भारतीय पत्रकारों के वीजा को फ्रीज करने के कदम का बचाव किया है। यह पूछे जाने पर कि चीन ने भारतीय पत्रकारों के वीजा को फ्रीज क्यों किया, चीन के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता माओ निंग ने दावा किया कि लंबे समय से चीन के पत्रकारों से भारत में भेदभावपूर्ण व्यवहार किया जा रहा है। भारत ने गुरुवार को फिर कहा कि अरुणाचल प्रदेश भारत का अभिन्न अंग है। अरुणाचल प्रदेश में स्थानों को चीन द्वारा नाम दिए जाने से जमीनी हकीकत नहीं बदलेगी।

स्वास्थ्य, सुरक्षा एवम् पर्यावरण के लिए कुटुम्ब वेलफेयर सोसाइटी का सार्थक प्रयास

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रयागराज। विश्व स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर कुटुंब वेलफेयर सोसाइटी द्वारा प्रयागराज स्थित ईदगाह मैदान में वृहद वृक्षारोपण कार्यक्रम का एवं मुख स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम व अग्नि दुर्घटनाओं से बचाव हेतु सुरक्षा कैंप का एवं मॉक ड्रिल का आयोजन 7 अप्रैल दिन शुक्रवार को किया गय कुटुंब वेलफेयर सोसायटी की अध्यक्ष जूही जायसवाल ने बताया की वन विभाग के सहयोग से प्रमुख प्रभागीय वन अधिकारी श्री महावीर जी के मुख्य आतिथ्य में पौधों का रोपण किया गया एवं सभी पौधों की सुरक्षा के लिए उन पर ट्री गार्ड लगाए गए ,इसके उपरांत इंडियन डेंटल एसोसिएशन के प्रदेश अध्यक्ष अमित शुक्ला एवं प्रदेश सचिव डॉ सचिन प्रकाश जी द्वारा मौखिक स्वास्थ्य पर व्याख्यान दिया गया एवं पूरी टीम के द्वारा उपस्थित लोगों में दवाओं एवं मंजन का वितरण किया गया,इसके पश्चात मुख्य अग्निशमन अधिकारी डॉ आर के पांडे जी के नेतृत्व में उनकी टीम द्वारा अग्नि दुर्घटनाओं से बचाव के

लिए मॉक ड्रिल करके और व्याख्यान के द्वारा बचाव के विभिन्न उपाय बताया गया कार्यक्रम की शुरुआत में प्रभागीय वन अधिकारी मुख्य अग्निशमन अधिकारी एवं इंडियन डेंटल एसोसिएशन के प्रदेश अध्यक्ष व सचिव के साथ ईदगाह मैदान की मुख्य सेवक का शॉल ओढ़ाकर एवं पुष्प गुच्छ देकर स्वागत किया गया ,कुटुंब वेलफेयर सोसाइटी के सभी सदस्यों एवं सहयोगियों के द्वारा चिड़ियों के लिए दाने पानी की व्यवस्था की गई इस कार्यक्रम में इलाहाबाद कैंब्रिज स्कूल के प्रबंधक और कुटुंब वेलफेयर सोसाइटी के अनुशासन एवं शिक्षा इकाई प्रमुख सलमान अहमद ,फरहान हुसैन ,अनवर भाई ,अध्यक्ष एवं मुतावल्ली ईदगाह मोहम्मद सुहेब फारूखी का विशेष सहयोग रहा कार्यक्रम के अंत में अनिमेष अग्रवाल जी ने सभी का आभार व्यक्त किया, कार्यक्रम में प्रमुख रूप से रौनक गुप्ता अमरेश जायसवाल डॉक्टर एस के पांडे महताब आलम मोहम्मद अख्तर अनुराग पांडे बसंत लाल आजाद कनक बागची ममता जायसवाल गीता गुप्ता रेनू जयसवाल जयमाला जयसवाल रंजना गुलाटी मनोज शर्मा शीला जी पूनम चौरसिया मीना यादव स्वाति निषाद रश्मि शुक्ला इमरान युसूफी फैजान रजा यश गुप्ता सहित बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे।

पत्नी के प्रेमी ने दी जान से मारने की धमकी, मुकदमा दर्ज़

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रयागराज। एक युवक की पत्नी के प्रेमी ने उसे जान से मारने की धमकी दी है। पीड़ित युवक ने अपनी वह अपनी पत्नी और बेटी की तलाश में पेरशान था। कुछ दिन पहले पता चला कि आरोपी तेजाब वाली गली में किराए पर कमरा

पत्नी के प्रेमी के खिलाफ अतरसुइया थाने में एफआईआर दर्ज कराई है। बलुआघाट में रहने वाले युवक ने पुलिस को बताया कि कुछ माह पूर्व उसकी पत्नी की क्षदरियाबाद में रहने वाले युवक से दोस्ती हो गई। उसको बहला फुसलाकर भगा ले गया। पत्नी अपने साथ बेटी को भी लेती गई। लेकर उसकी पत्नी के साथ रहता है। युवक ने अपनी पत्नी के प्रेमी सुरेश से बातचीत तो उसने जान से मारने की धमकी दी। युवक परेशान हो गया। उसकी पत्नी भी नहीं लौटी। अब युवक ने सुरेश के खिलाफ पत्नी को भगा ले जाने और जान से मारने की धमकी की एफआईआर दर्ज कराई है।

कौशांबी महोत्सव में कौशांबी को मिली सौगात

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रयागराज। 612.94 करोड़ की 117 परियोजनाओं का लोकार्पण,शिलान्यास गृहमंत्री अमित शाह , ण्श् योगी ने किया लोकार्पण,शिलान्यास डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य रहे मौजूद बीजेपी यूपी प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र चौधरी भी रहे मौजूद मंत्री नंदी समेत कई जनप्रतिनिधि महोत्सव में हुए शामिल सीएम योगी आदित्यनाथ का संबोधन खेलकूद के माध्यम से युवा आगे बढ़ रहे- सीएम खिलाड़ियों को सम्मानित किया जा रहा है- सीएम विजेता खिलाड़ियों को पुरस्कार मिल रहे - सीएम परियोजनाओं का लोकार्पण,शिलान्यास हो रहा।

पूर्व सपा मंत्री शाहिद मंजूर के साथ अतीक़,अशरफ़,बच्चों की फ़ोटो वाइरल

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रयागराज। प्रयागराज के उमेशप्पाल हत्याकांड में आरोपी अतीक उसके बेटों के साथ अब पूर्व मंत्री शाहिद मंजूर की फोटो सामने आई है। तस्वीर में सपा सरकार में मंत्री और वर्तमान विधायक शाहिद मंजूर अतीक अहमद उसके बेटों के साथ नजर आ रहे हें। तस्वीर मेरठ के किठौर क्षेत्र की बताई जा रही है। पूर्व मंत्री की आरोपी अतीक के साथ तस्वीर सामने आने पर पुलिस इस एंगल पर भी जांच में जुट गई है। मेरठ के किठौर सीट से सपा नेता शाहिद मंजूर वर्तमान विधायक है। अखिलेश यादव सरकार में राज्यमंत्री रहे शाहिद के अतीक अहमद उसके बेटे असद, भाई अशरफ, अली और एजम के साथ तस्वीरें सामने आई हैं। फोटो में शाहिद मंजूर अतीक के परिवार से मिल रहे हैं। अतीक भी मुस्कुराता हुआ दिख रहा है। राधना के पूर्व प्रधान ने ये तस्वीर मेरठ पुलिस को दी है। राधना के पूर्व प्रधान ने पुलिस को बताया कि अतीक का एक बेटा एमिटी नोएडा में पढ़ता था ऐसे में शाहिद और अतीक के बेटों की मुलाकातें नोएडा में अक्सर होती थी।

जिलाधिकारी ने अधिशासी अभियंता को लगाई फटकार एवं सीएनडीएस के प्रोजेक्ट मैनेजर के विरुद्ध प्रकट की नाराजगी

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रतापगढ़। जिलाधिकारी डा0 नितिन बंसल की अध्यक्षता में कल देर सायंकाल विकास भवन के सभागार में शासन की विकास प्राथमिकता वाले कार्यक्रमों एवं 50 लाख रूपये से अधिक लागत की परियोजनाओं एवं कार्यो के सम्बन्ध में समीक्षा की गयी। आई0जी0आर0एस0 पोर्टल की समीक्षा के दौरान पाया गया कि अधिकारियों द्वारा शिकायतों का निस्तारण गुणवत्तापूर्ण

नही किया जा रहा है जिस पर जिलाधिकारी ने अधिकारियों को सचेत करते हुये कहा कि आई0जी0आर0 एस0 पोर्टल पर प्राप्त शिकायतों का निस्तारण गुणवत्तापूर्ण करें, इसमें किसी भी प्रकार की लापरवाही एवं उदासीनता कदापि न बरते अन्यथा की स्थिति में सम्बन्धित अधिकारियों के विरूद्ध प्रतिकूल प्रविष्टि निर्गत की जायेगी और उसके बाद भी सुधार नही हुआ तो विभागीय कार्यवाही की जायेगी उन्होंने कहा कि शासन के मंशा के अनुरूप शिकायतों का गुणवत्तापूर्ण निस्तारण नही किया जा रहा है, सभी अधिकारी अपने दायित्वों को भलि भांति समझे और शिकायतकर्ता की शिकायत को गम्भीरतापूर्वक लेते हुये उसका निस्तारण करें। ओडीओपी की प्रगति ठीक न पाये जाने पर जिलाधिकारी ने उपायुक्त उद्योग दिनेश कुमार चौरसिया को प्रगति में सुधार लाने का निर्देश दिये। मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना की समीक्षा के दौरान पाया गया कि आवेदन नही आ रहे जिस पर जिलाधिकारी ने मुख्य चिकित्साधिकारी, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी एवं जिला प्रोबेशन अधिकारी को निर्देशित किया कि कन्या सुमंगला योजना के लाभार्थियों को अधिक से अधिक लाभान्वित करायें। वन स्टाप सेन्टर कार्मिकों का पेमेन्ट समय से न किये जाने पर जिलाधिकारी ने जिला प्रोबेशन अधिकारी को कड़ी फटकार लगाते हुये निर्देशित किया कि वन स्टाप सेन्टर कार्मिकों का पेमेन्ट यथाशीघ्र करायें अन्यथा कार्यवाही की जायेगी।आयुष्मान भारत गोल्डेन कार्ड की समीक्षा में गोल्डेन कार्ड बनाये जाने की प्रगति ठीक नही पायी गयी जिस पर जिलाधिकारी ने मुख्य चिकित्साधिकारी को निर्देशित किया कि गोल्डेन कार्ड की प्रगति में सुधार लायें। इसी प्रकार जिलाधिकारी ने निःशुल्क बोरिंग, सामुदायिक शौचालय, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना शहरी एवं ग्रामीण, मुख्यमंत्री आवास योजना, अमृत सरोवर योजना, बाल विकास एवं पुष्टाहार, उद्यान एवं खाद्य प्रसंस्करण, पेंशन, खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन, कौशल विकास मिशन, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, मत्स्य सम्पदा योजना, सिंचाई विभाग, जल निगम सहित अन्य योजनाओं की विस्तृत समीक्षा कर आवश्यक दिशा निर्देश दिये। जिलाधिकारी ने 50 लाख से अधिक लागत की परियोजनाओं की बिन्दुवार समीक्षा की।समीक्षा में पाया गया कि यू0पी0पी0सी0 एल0 निर्माण इकाई-2 प्रयागराज द्वारा कराये जा रहे मंगरौरा में कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय परिसर में हास्टल का निर्माण कार्य प्रगति काफी धीमी है जिस पर जिलाधिकारी ने यू0पी0 पी0 सी0एल0 के प्रोजेक्ट मैनेजर को कारण बताओ नोटिस जारी करने का निर्देश दिया। सी0एन0डी0एस0 यूनिट-10 द्वारा कराये जा रहे परियोजनाओं के कार्यो की समीक्षा के दौरान प्रोजेक्ट मैनेजर अनुपस्थित पाये गये और बैठक में उपस्थित सी0एन0डी0एस0 के प्रतिनिधि द्वारा परियोजनाओं के कार्यो का सन्तोषजनक उत्तर न दिये जाने पर जिलाधिकारी ने कड़ी नाराजगी व्यक्त करते हुये सी0एन0डी0एस0 के प्रोजेक्ट मैनेजर के खिलाफ कार्यवाही करने हेतु महाप्रबन्धक सीएनडीएस को पत्र भेजकर अवगत कराने का निर्देश दिया। आवास विकास परिषद द्वारा कराये जा रहे परियोजनाओं के कार्यो की समीक्षा में पाया गया कि परियोजनाओं का कार्य समय से पूर्ण नही किया जा रहा है जिस पर जिलाधिकारी ने आवास विकास परिषद के अधिशासी अभियन्ता को कड़ी फटकार लगाते हुये निर्देशित किया कि परियोजनाओं का कार्य समय से पूर्ण करायें, लापरवाही कदापि न बरती जाये। अन्त में जिलाधिकारी ने समस्त सम्बान्धित जनपद स्तारीय अधिकारियों व कार्यदायी संस्था को निर्देशित किया कि जनपद स्तरीय अधिकारी अपने विभाग द्वारा निर्माणाधीन परियोजनाओं/कार्य की प्रगति एवं गुणवत्ता का नियमित अनुश्रवण करना सुनिश्चित करें।निर्माणपरक कार्यो में गुणवत्ता से कोई समझौता न किया जाये। यदि किसी भी स्तर पर गुणवत्ता मानक के अनुरूप नहीं पायी जाती है तो सम्बन्धित अधिकारी का उत्तरदायित्व निर्धारित कर उनके विरूद्ध नियमानुसार दण्डात्मक कार्यवाही प्रस्तावित की जायेगी। जिलाधिकारी ने निर्देशित किया कि सभी परियोजनाओं का कार्य शासन द्वारा निर्धारित समय सीमा के अन्तर्गत गुणवत्ता सहित पूर्ण कर सम्बन्धित विभागों को हैण्डओवर कर दिये जाय। बैठक में मुख्य विकास अधिकारी ईशा प्रिया, मुख्य चिकित्साधिकारी डा0 जीएम शुक्ला,परियोजना निदेशक डी0आर0डी0ए0 आर0सी0 शर्मा, जिला विकास अधिकारी ओम प्रकाश मिश्र, डीसी मनरेगा इन्द्रमणि त्रिपाठी, जिला पंचायत राज अधिकारी रविशंकर द्विवेदी, जिला अर्थ एवं संख्याधिकारी राजेश सिंह सहित सहित जिला स्तरीय अधिकारियों व कार्यदायी संस्थाओं के प्रोजेक्ट मैनेजर/प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

नैनी के पाठक मार्केट स्थित हनुमान मंदिर धाम पर आयोजित हुई भगवा रैली

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रयागराज।श्री हनुमान जन्मोत्सव के पावन पर्व पर हनुमान मंदिर, पाठक मार्केट, ए0 डी0 ए0 कॉलोनी पर युवाओं द्वारा भगवा रैली का आयोजन जय श्री राम तथा जय बजरंगबली के जयकारों के साथ प्रेम, सौहार्द व शांतिपूर्ण ढंग से पुलिस प्रशासन व जिला अपराध निरोधक समिति की देख रेख के साथ पूर्ण हुआ जिसमे रैली के युवा आयोजक वैभव सिंह तथा अमन प्रताप सिंह, विनीत गौतम, अंशुमान ठाकुर ,सौरभ द्विवेदी महाराज, मंजीत खुराना , शरद कुमार आदि मुख्य रूप से उपस्थित रहे तथा शहर के नामचीन समाज सेवी व भारत तिब्बत सहयोग मंच के जिला महामंत्री (युवा विभाग) श्री विजेंद्र पाठक व जिला अपराध निरोधक समिति से कुशल समाज सेवी श्री मनीष विश्वकर्मा तथा शशांक मिश्रा बतौर मार्गदर्शक उपस्थित रहे, इस अवसर पर आयोजन को सकुशल व शांति व्यवस्था के साथ संपन्न कराते हुए पुलिस प्रशासन की तरफ से उप निरीक्षक जन्मेजय कुमार, उपनिरीक्षक प्रेम कांत सिंह, उपनिरीक्षक सर्वेश सिंह, उपनिरीक्षक रणविजय सिंह, उपनिरीक्षक मनीष कुमार, उपनिरीक्षक उपेंद्र तिवारी पुलिस बल के साथ उपस्थित रहे।

ए डी ए के मुख्य चौराहे पर एक्सीडेंट से पी डब्लू डी ने झाड़ा पल्ला कहा पी डी ए की ज़िम्मेदारी

आख्या

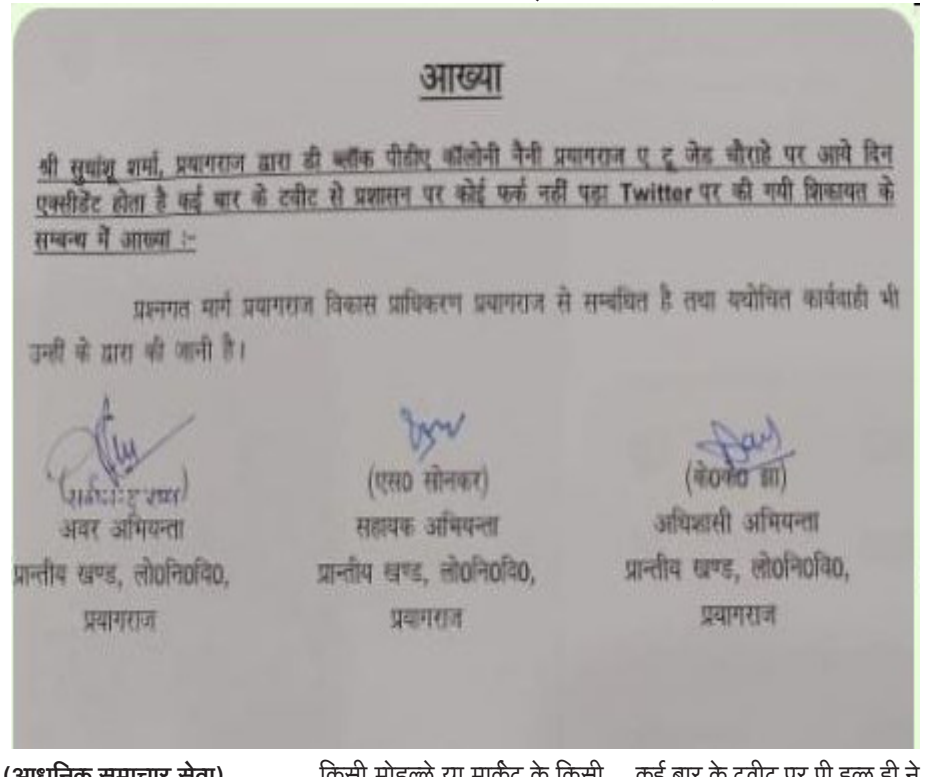

श्री सुधांशु शर्मा, प्रयागराज द्वारा डी ब्लॉक पीडीए कॉलोनी नैनी प्रयागराज ए टू जेड चौराहे पर आये दिन एक्सीडेंट होता है कई बार के ट्वीट से प्रशासन पर कोई फर्क नहीं पड़ा Twitter पर की गयी शिकायत के सम्बन्ध में आख्या :-

प्रश्नगत मार्ग प्रयागराज विकास प्राधिकरण प्रयागराज से सम्बंधित है तथा यथोचित कार्यवाही भी उन्हीं के द्वारा की जानी है।

[illegible]	(एस0 सोनकर)	[illegible]
अवर अभियन्ता	सहायक अभियन्ता	अधिशासी अभियन्ता
प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0,	प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0,	प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0,
प्रयागराज	प्रयागराज	प्रयागराज

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रयागराज। हाईवे और मुख्य मार्गों पर अक्सर एक्सीडेंट देखने को मिलेंगे। जिसकी जानकारी मिलते ही पुलिस एवं सड़क परिवहन विभाग या पी डब्लू डी हरकत में आ जाते है । किसी जगह पर एक्सीडेंट की ज़्यादा संभावनायें होती है वहाँ पर अक्सर गति रोधक या सावधान का बोर्ड देखने को मिलता है परंतु किसी मोहल्ले या मार्केट के किसी मुख्य इलाक़े या चौराहे पर यदि बार बार एक्सीडेंट होते है तो इसकी सुनवाई करने वाला कोई नहीं होता। आधुनिक समाचार की मुहिम से ए डी ए कॉलोनी के डी ब्लॉक के मुख्य ए टू जेड चौराहे पर अक्सर एक्सीडेंट की घटनायें सामने आने पर ठोस कदम उठाये गये। आधुनिक समाचार की तरफ़ से किए गये कई बार के ट्वीट पर पी डब्लू डी ने अपना पल्ला झाड़ते हुए ये कहा कि पी डब्लू डी का इन हो रहे एक्सीडेंट में कोई रोल नहीं है इसकी सारी जिम्मेदारी पी डी ए की है । कई बार की कंप्लेंट और ट्वीट के बाद भी पी डी ए की तरफ़ से कोई सुध नहीं ली गई। इलाक़े में हर हफ़्ते दो से तीन एक्सीडेंट की सूचना मिलती रहती है ।

गोवंशों के भरण पोषण एवं संरक्षण में किसी भी तरह की लापरवाही कदापि न बरती जाये-नोडल अधिकारी

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रतापगढ़। विशेष सचिव सामान्य प्रशासन विभाग/जनपद के नोडल अधिकारी राम केवल जी ने विकास भवन के सभागार में जनपद में गोवंशों के संरक्षण एवं भरणपोषण हेतु अधिकारियों के साथ समीक्षा की। समीक्षा के दौरान जिलाधिकारी डा0 नितिन बंसल, मुख्य विकास अधिकारी ईशा प्रिया, परियोजना निदेशक डीआरडीए आर0सी0 शर्मा, जिला पंचायत राज अधिकारी रविशंकर द्विवेदी ,समस्त उपजिलाधिकारी ,खण्ड विकास अधिकारी ,उप मुख्य पशु चिकित्साधिकारी, पशु चिकित्साधिकारी ,वृहद गौशालाओं के प्रधान सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारी उपस्थित रहे। जनपद में गो संरक्षण से सम्बन्धित आयोजित समीक्षा बैठक में नोडल अधिकारी ने जनपद के सभी विकास खण्डों में संचालित गो आश्रय स्थलों की संख्या, संरक्षित गोवंशों की संख्या, भरणपोषण की स्थिति, चारे की उपलब्धता, संरक्षित गोवंशों का स्वास्थ्य, सहभागिता योजनान्तर्गत सुपुर्द किये गये गोवंशों की संख्या, गोवंशों का टीकाकरण एवं स्वास्थ्य परीक्षण आदि से सम्बन्धित बिन्दुवार जानकारी सम्बन्धित विकास खण्डों के खण्ड विकास अधिकारियों एवं पशु चिकित्साधिकारियों से प्राप्त करते हुये गहन समीक्षा की एवं आवश्यक दिशा निर्देश दिये गये। नोडल अधिकारी ने मुख्य पशु चिकित्साधिकारी सहित जनपद के

सभी पशु चिकित्साधिकारियों एवं खण्ड विकास अधिकारियों को निर्देशित करते हुये कहा कि शासन की मंशा के अनुरूप निराश्रित गोवंशों का संरक्षण एवं भरणपोषण की स्थिति का सत्यापन करें। उन्होने कहा कि यदि किसी गो आश्रय स्थलों में किन्हीं कारणवश गोवंशों की संख्या मानक से ज्यादा है तो उनकी अलग से व्यवस्था करें। उन्होने निर्देशित किया कि गोवंशों के भरणपोषण एवं संरक्षण में किसी भी तरह की लापरवाही कदापि न बरती जाये तथा समय-समय पर गोवंशों का स्वास्थ्य परीक्षण भी किया जाय। गर्मी से बचाव के लिये टीन शेड को व्हाइट पेन्ट से पेन्ट किया जाये जिससे जानवरों को गर्मी से बचाया जा सके। बैठक में उन्होने बताया कि दो दिन के दौरे में 11 गौशालाओं का निरीक्षण किया गया है जिनमें भूसा, चारा की पर्याप्त व्यवस्था नही थी और जानवरों के हेल्थ बड़े ही कमजोर थे। बैठक में उन्होंने समस्त सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देशित करते हुये कहा कि मिक्चर चारा उन्हें पर्याप्त मात्रा में खिलाया जाये और जानवरों का स्वास्थ्य परीक्षण समय-समय पर किया जाये और जो भी जानवर अस्वस्थ है उनका ईलाज समय समय पर किया जाये। उन्होने कहा कि चारागाह की जमीनों का समतलीकरण कराया जाये और चारा उगाने हेतु मिट्टी को उपजाऊ बनाये जिससे चारे की बुवाई की जा सके।गौशालाओं के कर्मचारियों का भुगतान समय से किया जाये। समीक्षा के दौरान नोडल अधिकारी ने वृहद गौशालाओं के प्रधानों की समस्याओं को सुना एवं निस्तारण हेतु सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देशित किया।उन्होने अधिकारियों को निर्देशित किया कि पशुपालकों द्वारा यदि अपने क्षेत्र के अन्तर्गत जानवर छोड़ते हुये पाये जाये तो सम्बन्धित पशुपालक को नोटिस दी जाये। उन्होने निर्देशित किया कि निराश्रित गोवंशों को गौशालाओं में शत् प्रतिशत संरक्षित किये जाये जिससे किसानों की फसलों का नुकसान न होने पाये, इसे गम्भीरता से लिया जाये। नोडल अधिकारी ने अन्त में सभी अधिकारियों को निर्देशित किया कि जनपद में संचालित गो-आश्रय स्थलों का सुचारू रूप से सफल संचालन करायें, लापरवाही कदापि न बरती जाये अन्यथा सम्बन्धित अधिकारी के विरूद्ध कार्यवाही की जायेगी, सभी अधिकारी अपने-अपने दायित्वों/कार्यो को शत् प्रतिशत निर्वहन करें।

घुटनों के चलकर इस महिला ने पूरी की क्रूस यात्रा प्रभु यीशु की यातनाएं देख हर आंख हो गई नम

(आधुनिक समाचार सेवा)

वाराणसी। के छावनी क्षेत्र स्थित महागिरजा में दोपहर में जब क्रूस यात्रा की झांकी निकली तो प्रभु यीशु पर की गई यातनाओं को देख वहां मौजूद हर किसी की आंखें नम हो गईं। वहीं एक महिला भी थी जिसने घुटनों के बल चलकर क्रूस यात्रा की झांकी पूरी की।

प्रभु यीशु के बलिदान की याद में चर्च के घंटे थमे थे। पूजा की वेदियां विरान थीं। मसीही गम में डूबे थे। मौका था गुड फ्राइडे का। काशी धर्म प्रांत के बिशप फादर यूजिन जोसेफ की अगुवाई में छावनी क्षेत्र स्थित महागिरजा में दोपहर में जब क्रूस यात्रा की झांकी निकली तो प्रभु यीशु पर की गई यातनाओं को देख वहां मौजूद हर किसी की आंखें नम हो गईं। प्रभु यीशु के मृत्युदंड से उन्हें कब्र में दफन किए जाने के 14 पड़ावों का नाट्य टोलियों ने भावपूर्ण व मार्मिक मंचन किया। हर पड़ाव पर रोमी शासकों की यातना की झलक देख मसीहियों की आंखें भींगती गईं। यीशु के मां से मिलने, येरूसलम की महिलाओं के विलाप और लहुलूहान यीशु को क्रूस पर चढ़ाने जैसे प्रसंगों का सजीव चित्रण किया गया। प्रार्थना और क्रूस रास्ते का गान हुआ तो सभी ने क्रूस की उपासना कर बाइबिल का पाठ किया। पुरोहित फादर थॉमस, फादर अगस्टीन केजे, फादर चंद्रकांत आदि रहे। इसी तरह लंका, मड़ौली, बरेका, शिवपुर, चांदमारी आदि चर्चों में भी प्रार्थना कराई।वाराणसी के छावनी क्षेत्र स्थित महागिरजा में दोपहर में जब क्रूस यात्रा की झांकी निकली तो प्रभु यीशु पर की गई यातनाओं को देख वहां मौजूद हर किसी की आंखें

नम हो गईं। वहीं एक महिला भी थी जिसने घुटनों के बल चलकर क्रूस यात्रा की झांकी पूरी की। ये महिला पिछले कई सालों से क्रूस यात्रा घुटनों से चलकर पूरा करती है। महिला ने बताया कि ये प्रभु यीशु के प्रति उनकी श्रद्धा है। प्रभु यीशु ने इस दिन यातनाएं सही थीं इसलिए वो ऐसा करती हैं। लेंट डेज के शुरू होने से गुड फ्राइडे तक यानी 40 दिनों तक मसीही समाज ने प्रभु यीशु के दुखभोग का एहसास किया। उन्होंने अपने शौक से तौबा कर उपवास रखे। लाल चर्च के सुरेंद्र चरन ने बताया कि 40 दिनों तक लोग अपने खर्च की कटौती से बचे पैसे को चर्च में दान करते हैं। फादर फिलीप डेनिस ने बताया कि गुड फ्राइडे पर काशी धर्म प्रांत के चर्चों से दान की कुछ राशि येरूसलम भेजी जाती है। लेंट डेज के शुरू होने से गुड फ्राइडे तक यानी 40 दिनों तक मसीही प्रभु यीशु के दुखभोग का एहसास किया। उन्होंने अपने शौक से तौबा कर उपवास रखे। लाल चर्च के सुरेंद्र चरन ने बताया कि 40 दिनों तक लोग अपने खर्च की कटौती से बचे पैसे को चर्च में देते हैं, जिससे सालभर गरीबों, यतीमों व जरूरतमंदों की मदद की जाती है। नीम की पत्ती की चटनी बांटीं प्रभु यीशु की यातनाओं को दर्शाने के लिए कुछ चर्चों में मसीही लोगों में नीम की पत्ती की चटनी बांटी गई। ताकि लोगों को एहसास हो कि जिंदगी कितनी कड़वी है। यीशु ने किस तरह हमलोगों को मुक्ति दिलाने के लिए तमाम दुखों को उठाए।

व क्रूस यात्रा की झांकी सजाई गई। वहीं, सीएनआई चर्चों में भी यीशु का बलिदान दिवस मनाया गया। लाल चर्च में प्रयागराज से आए बिशप जगधारी मसीह ने यीशु के सात वचनों की व्याख्या की। पादरी संजय दान ने प्रार्थना

निकाय चुनाव की अधिसूचना जारी होने में फिर फंसा पेंच

(आधुनिक समाचार सेवा)

लखनऊ। पिछड़ा वर्ग आयोग की रिपोर्ट को लेकर हाईकोर्ट में नई याचिका 10 अप्रैल को होगी सुनवाई निकाय चुनाव को लेकर शरद पाठक के माध्यम से दाखिल की है। याचिका में कहा गया है कि नगर पालिका अधिनियम में पहले पुराने नियम के तहत राज्य स्तर पर सीटों का आरक्षण तय

राज्य सरकार के आरक्षण संबंधी अध्यादेश समेत पिछड़ा वर्ग आयोग की रिपोर्ट को चुनौती देने वाली एक नई याचिका इलाहाबाद हाईकोर्ट की लखनऊ पीठ में दाखिल की गई है। कोर्ट 10 अप्रैल को इस पर सुनवाई करेगा। शुक्रवार को न्यायमूर्ति राजन रॉय और न्यायमूर्ति मनीष कुमार की खंडपीठ में मुरादाबाद जिले की ठाकुरद्वारा नगर पंचायत सीट आरक्षित होने को लेकर यह याचिका सुहैल खां ने अधिवक्ता करने का नियम था। अब अध्यादेश संख्या -3 के माध्यम से नियम संशोधित कर नए नियम के तहत मंडल व जिला स्तर पर आरक्षण निर्धारित किया गया है। यह पूरी तरह से कानून की मंशा के खिलाफ है। याचिका में उप्र राज्य स्थानीय निकाय समर्थित पिछड़ा वर्ग आयोग की रिपोर्ट को भी यह कहते हुए चुनौती दी गई है कि इसमें ओबीसी के राजनीतिक पिछड़ेपन का अध्ययन किया जाना चाहिए था, जो नहीं किया गया।

हनुमानजी के जन्मोत्सव पर निकली भव्य शोभायात्रा,लगे गगनभेदी नारे

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रतापगढ़। हनुमान जन्मोत्सव के पावन अवसर पर सगरा सुंदरपुर बाजार में एक भव्य शोभायात्रा निकाली गई।शोभा यात्रा के दौरान कई प्रकार की झाँकियों का दृश्यांकन किया गया जिसे देख लोगों का मन मुग्ध हो गया। इस भव्य शोभायात्रा में कलाकारों के द्वारा राधा-कृष्ण पर आधारित नृत्य-गीत एवं शिव तांडव नृत्य दर्शकों के लिए मनोहारी रहा।डीजे की धुन पर सवार ये कलाकार अपने नृत्य से लोगों को लुभाते रहे।साथ ही जय श्री राम,जय हनुमान के गगनभेदी नारे से पूरा बाजार गुंजायमान रहा। भक्ति रस से सराबोर यह शोभायात्रा एवं झांकी योगी सरकार की सांस्कृतिक विरासत को बनाए रखने की पहल की महत्ता को प्रकट कर रही थी। शोभा यात्रा का संयोजन सर्वेश जायसवाल, इंद्रजीत सिंह सरदार,रामसूरत तिवारी,शिव शंकर शुक्ल ने किया एवं आयोजक प्रदीप सिंह,संजय मोदनवाल,रवि जायसवाल एवं राज किशोर शुक्ल रहे। शोभायात्रा में डॉ0राकेश सिंह, अभय प्रताप सिंह मुन्ना,प्रधान प्रतिनिधि श्यामजी जायसवाल, कृपा शंकर जायसवाल,प्रहलाद मोदनवाल, गोपाल मोदनवाल, नंदलाल मोदनवाल,शंभू मोदनवाल,सोनू कौशल,विष्णु कुमार गुप्ता, डॉ0सदाशिव वर्मा, विवेक जायसवाल,विजय जायसवाल, राज कुँवर मोदनवाल, आदर्श गुप्ता,लवकुश,रत्नाकर तिवारी, प्रदीप तिवारी,रामजी जायसवाल, राकेश सिंह आदि प्रमुख रहे। पुलिस प्रशासन इस अवसर पर पूरी तरह से मुस्तैद रहा।

औद्योगिक थाना क्षेत्र में सड़वा चौकी के सामने शुक्रवार की रात वाहन सर्विस की दुकान में अचानक आग गयी

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रयागराज । औद्योगिक थाना क्षेत्र में सड़वा चौकी के सामने शुक्रवार की रात वाहन सर्विस की दुकान में अचानक आग गयी। आग लगने के बाद मौके पर हड़कंप मच गया। आनन फानन में लोगो ने सूचना पुलिस और फायर बिग्रेड को दी। जिसके बाद मौके पर पहुंची फायर बिग्रेड की टीम ने काफी मशक्कत के बाद आग पर काबू पा लिया। मिली जानकारी के अनुसार औद्योगिक क्षेत्र के सड़वा चौकी के सामने गोलू सर्विस सेंटर है। जहां वाहनों की सर्विसेज का काम होता है। शुक्रवार की रात वहां अचानक रखी मोबिल ऑयल पेटी में आग लग गयी। जिससे अफरातफरी मच गई। आस पास रहे लोगों ने आग को बुझाने का प्रयास किया, लेकिन आग भीषण होने कारण काबू में नहीं आ सकी। स्थानीय लोगों ने सूचना पुलिस और फायर बिग्रेड को दी जिसके बाद मौके पहुंचीं फायर बिग्रेड की टीम ने काफी देर बाद आग पर काबू पा लिया। आग लगने का कारण शॉर्ट सर्किट बताया जा रहा है।

सीधे प्रवेश

100% Placement

15% Fee Concession

नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र

(भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त)

(पहले आओ पहले पाओ)

❖ प्रशिक्षण में उत्तीर्ण होने वाले छात्रों को रोजगार पाने का पूर्ण अवसर

❖ हाइस्कूल में 60% से उपर अंक लाने वाले छात्रों को प्रशिक्षण शुल्क में 15% प्रतिशत की छूट दी जायेगी।

➢ कम्प्युटर आपरेटर (कोपा)
➢ डेटा इंट्री आपरेटर
➢ फायर सेफ्टी
➢ कम्प्युटर टीचर ट्रेनिंग
➢ इलेक्ट्रीशियन
➢ सीएनसी प्रोग्रामिगं
➢ इलेक्टिक मैकैनिक

फिटर
वेल्डर
सीसीए
रेफ्रीजरेटर एवं ए.सी.
सिक्योरिटी सर्विस
बेसिक कम्प्युटर
कम्प्युटर हाडवेयर

Apply Online: www.nainiti.com | Mail us at – info@nainiti.com

प्रवेश हेल्पलाइन नं0

8081180306 , 9415608710 , 8103021873

⇨ इण्डियन कॉफी हाउस के सामने तुलसीयानी प्लाजा , तीसरी मंजिल , सिविल लाइन , प्रयागराज।

इतनी सी बात पर अधेड़ की लाठी-डंडे से पीटकर हत्या

(आधुनिक समाचार सेवा)

वाराणसी। घटना के बाद आरोपी फरार, तलाश जारीकैथी गांव निवासी नन्द कुमार का जमीन को पड़ोसी गांव के कुछ लोगों से विवाद चल रहा है। इसी विवादित भूमि पर बोई गई गेहूं की फसल को दूसरे पक्ष के लोग काट रहे थे। आरोप है कि नन्द कुमार ने उन्हें गेहूं काटने से मना किया तो विपक्षियों ने लाठी-डंडे और धारदार हथियार से हमला कर दिया। हमले में नन्द कुमार के सिर पर गंभीर चोट आई और मौके पर ही उसकी मौत हो गई। शोर गुल सुनकर अन्य लोग पहुंचे तो आरोपी फरार हो गए। घटना की सूचना पाकर सदर कोतवाल मनोज कुमार फोर्स के साथ मौके पर पहुंचे। शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए जिला अस्पताल भेज दिया। कोतवाली प्रभारी ने बताया कि नन्द कुमार के पुत्र अनिल ने तीन सगे भाइयों समेत पांच लोगों के खिलाफ तहरीर दी है। आरोपियों की तलाश की जा रही है। कैथी गांव निवासी नन्द कुमार का जमीन को पड़ोसी गांव के कुछ लोगों से विवाद चल रहा है। इसी विवादित भूमि पर बोई गई गेहूं की फसल को दूसरे पक्ष के लोग काट रहे थे। आरोप है कि नन्द कुमार ने उन्हें गेहूं काटने से मना किया तो विपक्षियों ने लाठी-डंडे और धारदार हथियार से हमला कर दिया। सोनभद्र में सदर कोतवाली क्षेत्र के कैथी गांव में शनिवार को जमीन विवाद में मनबढ़ों ने लाठी-डंडे से पीटकर अधेड़ की हत्या कर दी। वारदात को अंजाम देने के बाद आरोपी फरार हो गए। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। आरोपियों की तलाश की जा रही है।

महारानी दुर्गावती स्मारक स्थल पर आदिवासी सम्मान समारोह एवं संगोष्ठी का हुआ आयोजन

(आधुनिक समाचार सेवा)

दुद्धी, सोनभद्र। दुद्धी ब्लॉक क्षेत्र के मल्देवा में स्थित महारानी दुर्गावती स्मारक स्थल पर शुक्रवार को

आदिवासी सम्मान समारोह एवं गोष्ठी का आयोजन किया गया।कार्यक्रम के मुख्य अतिथि वरिष्ठ समाजसेवी संजय सिंह गोंड़ वाराणसी रहे,जबकि विशिष्ट अतिथि के रूप में हंसराज धुर्वे, अशर्फी सिंह परस्ते रहे।कार्यक्रम की शुरुआत धर्माचार्य अनिल सिंह पोया,हरिकिशुन, रामनाथ, आनन्द सहित अन्य धर्माचार्यों ने बावन गण के देवी देवताओं की आदिवासी रीति रिवाज के साथ पूजा पाठ से किया गया । आदिवासी सम्मान समारोह को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि संजय सिंह गोंड़ ने कहा कि आदिवासी समाज का बहुत बड़ा इतिहास है।आदिवासियों ने आजादी के लड़ाई में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।हमारा समाज आज भी संघर्ष कर रहा है।आदिवासी समुदाय को राजनीतिक दल वोट बैंक के रूप में इस्तेमाल करते हैं।अब तक आदिवासियों का जितना विकास होना चाहिए था उतना विकास नही हुआ है।हम अपने आदिवासी समाज से आग्रह करते हैं कि आप सब लोग अपने बच्चों को जरूर पढाएं क्योंकि जब तक हमारे बच्चे शिक्षित नही होंगे तब तक हम अपनी हक- हुकुम की लड़ाई नही लड़ सकते हैं। इस दौरान उन्होंने दर्जनों लोगों को सम्मानित किया और समाज को एकजुट होने पर जोर दिया।इसके अलावा हंसराज धुर्वे अशर्फी सिंह सहित अन्य वक्ताओं ने भी सम्मान समारोह को सम्बोधित किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता सौदागर सिंह कोरचो ने किया। इस दौरान ललित सिंह,रामफल,अरविंद, अमृत लाल,मनबस देवी,कौशल्या, मानमती,रामकेश सहित अन्य मौजूद रहे।सम्मान समारोह का संचालन आदिवासी संघ के जिलाध्यक्ष फौ दार सिंह परस्ते ने किया।

अपना दल एस ने नवनियुक्त जिला अध्यक्ष का किया स्वागत

(आधुनिक समाचार सेवा)

मिर्जापुर। अपना दल एस के माननीय प्रदेश अध्यक्ष राजकुमार पाल की संस्तुति के पश्चात माननीय राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदया श्रीमती अनुप्रिया पटेल जी से प्राप्त अनुमोदन के क्रम में मीरजापुर जनपद के निवर्तमान जिलाध्यक्ष इंजीनियर राम लौटन बिंद जी को पुनः जिला की कमान सौंपी गई है। इनके अलावा अयोध्या के निवर्तमान जिलाध्यक्ष कृष्ण देव बर्मा (गवास) को पुनः जिला अध्यक्ष बनाया गया है। इंजीनियर राम लौटन बिंद को पुनः जिलाध्यक्ष बनाये जाने पर जनपद के कार्यकर्ताओं में खुशी का माहौल है। कार्यकर्ताओं ने जिलाध्यक्ष का जोरदार स्वागत किया। जिलाध्यक्ष इंजीनियर राम लौटन बिंद ने राष्ट्रीय नेतृत्व का धन्यवाद ज्ञापित की और संगठन को मजबूत बनाने का संकल्प लिया। उन्होंने कहा कि 2024 लोकसभा चुनाव को अपना दल एस पार्टी की जीत के लिए हमें एक साथ मिलकर काम करना होगा। पार्टी के कार्यकर्ताओं के बल पर ही हमें सफलता मिलेगी।

पार्टी को आगे बढ़ाने और सशक्त करने के लिए कार्यकर्ता महत्वपूर्ण अंग है। हमें सेक्टर और बूथ कमेटी को और सशक्त करनी होगी। उन्होंने कहा कि माननीय राष्ट्रीय अध्यक्ष व मिर्जापुर की लोकप्रिय सांसद केंद्रीय मंत्री श्रीमती अनुप्रिया पटेल के कार्यकाल के 9 साल पूरा हो रहा है यह 9 साल मिर्जापुर के विकास के लिए बेमिसाल रहा है। हम सभी एक होकर माननीय राष्ट्रीय अध्यक्ष व मिर्जापुर सांसद केंद्रीय मंत्री श्रीमती अनुप्रिया पटेल के नेतृत्व में अपना दल एस पार्टी के उपलब्धि को घर घर पहुंचाने का संकल्प लेते हैं। इस दौरान राष्ट्रीय सचिव विनोद गंगवार, प्रदेश उपाध्यक्ष युवा मंच रामवृक्ष बिंद, जिला अध्यक्ष आईटी मंच हेमंत कुमार बिंद, जिला उपाध्यक्ष संजय उपाध्याय, एडवोकेट संतोष विश्वकर्मा, जिला महासचिव युवा मंच संतोष कुमार पटेल, विधानसभा उपाध्यक्ष डॉ रणजीत पटेल, विधानसभा सचिव परमेश्वर पटेल, जोन अध्यक्ष रतन जायसवाल, मझवां विधानसभा मीडिया प्रभारी अजय पाठक, लाल धर पटेल, लालमन पटेल, विकास मौर्य सहित आदि लोग उपस्थित रहें। उक्त आशय की जानकारी जिला मीडिया प्रभारी शंकर सिंह चौहान ने दी।

मुख्य विकास अधिकारी ने विकास खंड सिटी के ग्राम पंचायत धानीपट्टी में क्राप कटिंग कराकर परखी फसल की उत्पादकता

(आधुनिक समाचार सेवा)

मीरजापुर। 07 अप्रैल 2023- मुख्य विकास अधिकारी श्रीलक्ष्मी वीएस विकास खंड सिटी के ग्राम पंचायत धानीपट्टी में राजस्व कार्मिको के साथ क्राप कटिंग कराकर जनपद में फसल उत्पादकता को परखा। मुख्य विकास अधिकारी द्वारा अपनी देख रेख में काश्तकार श्री राजकुमार पुत्र मुन्नीलाल के खेत का कराया गया। खेत के दक्षिण पश्चिम कार्नर से 14 कदम लंबाई, 7 कदम चैड़ाई की फसल छोड़कर छोड़ कर 10ग10ग10 मीटर त्रिकोणीय प्लाट (7 धूर, 43.3 वर्ग मीटर) की कटाई कराया गया। फसल का वजन 14.150 किग्रा पाया गया।

विश्व स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर बच्चो व माताओं को स्वास्थ्य के प्रति जनजागरूकता शिविर के माध्यम से जानकारी दी गई

(आधुनिक समाचार सेवा)

मीरजापुर।–माननीय उत्तर प्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण लखनऊ के निर्देशन में माननीय जनपद न्यायाधीश / अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण श्री अनमोल पाल जी के आदेशानुसार जिला

विधिक सेवा प्राधिकरण मीरजापुर के तत्वावधान में मण्डलीय जिला चिकित्सालय मीरजापुर बच्चो व माताओं को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करने के प्रति जागरूकता शिविर कार्यक्रम किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ अपर जिला जज, एफ.टी.सी. / सचिव श्री लाल बाबू यादव, मेडिकल कालेज के प्राचार्य डा0 आर0बी0कमल, मुख्य चिकित्साधिकारी डा0 राजेन्द्र प्रसाद ने किया। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव श्री लाल बाबू यादव ने उपस्थित विशेषज्ञ, वरिष्ठ डाक्टर्स, वरिष्ठ सर्जन, एनम, नर्स, आशा संगिनी एवं मण्डलीय अस्पताल के कर्मचारीगण को सम्बोधित करते हुए बताया कि विश्व स्वास्थ्य संगठन की 75वीं वर्षगांठ पर डाक्टर्स ईश्वर का ही एक रूप है वह बधाई के पात्र है। बच्चो व माताओं और हम सभी को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक व सजग रहने की आवश्यकता है, इस भाग दौड व तनवावपूर्ण जीवन से मुक्ति के लिए स्वच्छ पेयजल, शुद्ध खानपान, शुद्ध हवा के लिए पर्यावरण के साथ साथ योगा को अपनाना अत्यन्त जरूरी है और अपने दिनचर्या को सही एवं सुचारू तौर पर करना आवश्यक है तभी हम सब स्वस्थ्य रहेगें। मेडिकल कालेज के प्राचार्य डा0 आर0बी0कमल, मुख्य चिकित्साधिकारी डा0 राजेन्द्र प्रसाद, अपर मुख्य चिकित्साधिकारी डा0 वी0 के0 चौधरी, डिप्टी सी.एम.ओ. डा0 यू.एन. सिंह, नेत्र विशेषज्ञ डा0 नन्द लाल, डा0 एल.एस. मिश्रा, एवं ब्लडबैक के श्री राम कुमार गुप्ता ने विश्व स्वास्थ्य शिविर में उपस्थित विशेषज्ञ, वरिष्ठ डाक्टर्स, वरिष्ठ सर्जन, एनम, नर्स, आशा, संगिनी एवं अस्पताल के कर्मचारीगण को सम्बोधित करते हुए बताया कि ठस्वस्थ्य रहने के लिए तनाव मुक्त होना जरूरी है, जिसके लिये स्वच्छ पेयजल, शुद्ध हवा, शुद्ध खान पान, योगा, मार्निंग वाक, को जो मनुष्य अपने दिनचर्या में अपनाता है, वह हमेशा स्वस्थ्य रहेगा। विशेषज्ञ डार्क्टस ने हार्ट, नेत्र, किडनी, लीवर, एवं ब्लड से सम्बन्धित बीमारियों एवं उसके इलाज के सन्दर्भ में विस्तार पूर्वक चर्चा किए। विश्व स्वास्थ्य शिविर कार्यक्रम में डाक्टर श्री उमेश कुमार श्रीवास्तव, डा0 अखिलेश कुमार दूबे, डा0 आनन्द कुमार सिंह, व0स0 श्री दीपक कुमार श्रीवास्तव, व मण्डलीय जिला चिकित्सालय के समस्त स्टाफ उपस्थित होकर सहयोग प्रदान किए।

दुद्धी मण्डल में बुथ स्तर पर मना भाजपा का 43 वा स्थापना दिवस

(आधुनिक समाचार सेवा)

दुद्धी, सोनभद्र। अप्रैल को दुद्धी तहसील मुख्यालय पर डीसीएफ सभागार में भाजपा कार्यकर्ताओं ने भारतीय जनता पार्टी के 43वें स्थापना दिवस पर संगोष्ठी का आयोजन कर स्थापना दिवस मनाया इससे पूर्व दुद्धी मण्डल के कई बूथों पर भाजपा ध्वज लगाकर तथा प्रधामनंत्री नरेंद्र मोदी के उद्धबोधन को सुना कार्यक्रम की शुरुआत भाजपा कार्यकर्ताओं ने प0 दीनदयाल उपाध्याय व श्यामा प्रसाद मुखर्जी के चित्र पर पुष्प चढ़ा कर श्रद्धांजलि अर्पित किया ।इस दौरान इस संगोष्ठी के मुख्यातिथि पूर्व जिला महामंत्री सुरेंद्र अग्रहरी व विशिष्ट अतिथि दिलीप पांडे ने अपने संबोधन में कहा भाजपा आज अपना 44वां स्थापना दिवस मना रही है। भाजपा का इतिहास भारतीय जनसंघ से जुड़ा है। साल 1951 में 21 अक्टूबर को जनसंघ और गठन 6 अप्रैल 1980 को बीजेपी की स्थापना हुई थी। भाजपा ने राष्ट्र प्रथम के मंत्र को अपना आदर्श बनाया है। बीजेपी ने लोकतंत्र की कोख से जन्म लिया... लोकतंत्र के अमृत से पोषित है और देश के लोकतंत्र और संविधान को मजबूत करते हुए समर्पण भाव से दिन-रात देश के लिए काम कर रही है बीजेपी का पॉलिटिकल कल्चर बड़े सपने देखने और उससे भी ज्यादा हासिल करने के लिए जी जान से

खप जाना है। शरीर का कण-कण, सपने का पल-पल खपना का हौसला रखते हैं।बीजेपी का पॉलिटिकल कल्चर बड़े सपने देखने और उससे भी ज्यादा हासिल करने के लिए जी जान से खप जाना है।बीजेपी दिन-रात देश के लिए काम कर रही है। आज बीपेजी विश्वास, विकास का पर्याय है। बीजेपी सबका साथ सबका विकास और सबका प्रयास के साथ काम कर रही है।बीजेपी के करोड़ों कार्यकर्ताओं को पार्टी के स्थापना दिवस पर हार्दिक शुभकामनाएं और बधाई देता हूं। हमारे सभी वरिष्ठ नेता ने पार्टी को अपने खून-पसीने से सींचा है आज देश का गरीब,आम आदमी, युवा, माताएं-बहनें, शोषित-वंचित हर कोई भाजपा के कमल को खिलाने और रक्षा करने के लिए ढाल बनकर खड़ा है।भाजपा को 21वीं सदी की भविष्य की पार्टी बनाना है। अति आत्मविश्वास का शिकार नहीं होना है। लोग अभी से कह रहे हैं कि 2024 में भाजपा को कोई नहीं हरा सकता। यह बात सही है, लेकिन भाजपा कार्यकर्ता के नाते हर नागरिक का दिल जीतना होगा। हर चुनाव उसी परिश्रम से लड़ना है, जैसा 80 के दशक से लड़ते आए हैं।इस संगोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे दुद्धी मण्डल अध्यक्ष मनोज सिंह बबलू ने कहा पार्टी को अपने खून-पसीने से सींचने वाले नेताओं और कार्यकर्ताओं को कोटी-कोटी नमन है।संगोष्ठी का संचालन मण्डल महामंत्री प्रेमनारायण मोनू सिंह ने किया संगोष्ठी में मुख्यरूप से पूर्व जिला महामंत्री बिपिन बिहारी समाजसेवी कमलेश मोहन अमरनाथ जायसवाल डीसीएफ डायरेक्टर संजु तिवारी मण्डल उपाध्यक्ष दीपक गुप्ता भाजयुमो जिला उपाध्यक्ष सुमित सोनी मण्डल महामंत्री मनीष जायसवाल प्रबुद्ध प्रकोष्ठ संयोजक जितेंद्र चंद्रवंशी जिला सह संयोजक भोलू जायसवाल अल्पसंख्यक मोर्चा मण्डल अध्यक्ष राफे खान मण्डल मंत्री गोपाल सोनी हिमांशु चौरसिया मीडिया प्रभारी रवि सिंह सोशल मीडिया प्रमुख पीयूष कसेरा पिछड़ा मोर्चा उपाध्यक्ष अंकुर जायसवाल भाजयुमो उपाध्यक्ष आमेश सिंह बुथ अध्यक्ष सतेंद्र कुमार अजय चंद्रवंशी वार्ड संयोजक भोला सोनी चमेली देवी वसुंधरा देवी धर्मेंद्र यादव सहित कार्यकर्ता बन्धु उपस्थित रहे।

ग्रामीण क्षेत्रों में नहीं हो सका आक्सीजन प्लांट का निर्माण

(आधुनिक समाचार सेवा)

मिर्जापुर। कोविड संक्रमण के दूसरी लहर में आक्सीजन की समस्या होने के बाद जिले के मंडलीय अस्पताल में आक्सजीन प्लांट लगने के बाद ग्रामीण क्षेत्र के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भी विधायक निधि व अन्य फंड से आक्सीजन प्लांट लगना था, पर उसका निर्माण नहीं हो सका। जिले में मंडलीय अस्पताल, जिला महिला अस्पताल और विंध्याचल सीएचसी को लेकर चार प्लांट लगाए गए है। इसमें दो आक्सजीन प्लांट में तकनीकी समस्या है। जो एक-दो दिन में दूर हो जाएगी, पर विभाग की माने तो चारों प्लांट का संचालन हो रहा है। कोविड के समय आक्सीजन की कमी के कारण लोगों को समस्या का सामना करना पड़ा था। जिसके बाद आक्सीजन प्लांट बनाने पर जोर दिया गया।

जिलाधिकारी की अध्यक्षता में जिला सड़क सुरक्षा समिति की बैठक सम्पन्न

(आधुनिक समाचार सेवा)

मीरजापुर। 06 अप्रैल 2023- जिलाधिकारी दिव्या मित्तल की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में

जिला सड़क सुरक्षा समिति की बैठक आहूत की गयी। बैठक में एन0एच0आई0 विभाग द्वारा जिलाधिकारी को अवगत कराया गया कि हाईवे पर 02 एम्बुलेंस संचालित हैं जो दुघर्टना होने पर घायल होने की स्थिति में उपचार हेतु भेजा जा सकें। जिलाधिकारी ने कहा कि एम्बुलेंस 102 व 108 की मानिटरिंग की जायें। उन्होने कहा कि जो भी स्कूल वाहन है वे बिना फिटनेस के गाड़ी न चलायें। उन्होने कहा कि स्कूल के वाहनों के स्वास्थता प्रमाण पत्र व स्कूल वाहन चालकों के चरित्र का सत्यापन अवश्य करा लिया जाय। उन्होने कहा कि सड़क सुरक्षा के दृष्टिगत जागरूकता अभियान चला कर लोगो को दुघर्टना से बचाव के बारे में जानकारी दी जाय। यह भी निर्देशित किया गया कि समय-समय पर प्रवर्तन कार्यवाही की जायें। जिलाधिकारी ने कहा कि सड़क दुघर्टना में घायल व्यक्तियों को तत्काल चिकित्सीय सुविधा उपलब्ध कराया जाय। जिलाधिकारी ने सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देशित करते हुये कहा कि गाड़ियों में फर्जी नेम प्लेट लगाकर चलने वालो के विरूद्ध अभियान चलाकर कार्यवाही करें। पुलिस अधीक्षक संतोष कुमार मिश्र ने पुलिस अधिकारियों को निर्देशित करते हुये कहा कि समय-समय पर प्रवर्तन कार्यवाही करते हुये दुघर्टनाओं में कमी लाये। उन्होने कहा कि जो अवैध वाहन स्टैण्ड संचालित कर वसूली की जा रही है उस पर नियमानुसार जांच कर कार्यवाही की जाये। बैठक में अपर जिलाधिकारी वि/रा0 शिव प्रताप शुक्ल, क्षेत्राधिकारी नगर परमानन्द कुशवाहा, अधीक्षण अभियन्ता लोक निर्माण विभाग अशोक कुमार द्विवेदी, अधिशासी अभियन्ता सुनील दत्त, जिला विद्यालय निरीक्षक अमरनाथ सिंह, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी गौतम प्रसाद, सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारी उपस्थित रहें।

यहीं से तय होता है भारत का मानक समय, लंकेश्वर रावण ने यहीं से की थी ज्योतिष की गणना

(आधुनिक समाचार सेवा)

मीरजापुर। लंकाधिपति रावण भी अपनी ज्योतिष गणित की गणना के लिए विंध्याचल आता था। तब से लेकर अब तक विन्ध्य धरा का अमरावती चौराहे के पास का स्थल भारत का मानक समय रहा है। यह स्थान भारत की प्रधान मध्यान्ह रेखा 82.5 पूर्वी देशांतर पर स्थित है। जिला प्रशासन की ओर से इस स्थान को सुंदरीकरण करते हुए पर्यटन स्थल के रूप में सेल्फी प्वाइंट बना दिया गया है। भारत का मानक समय विंध्याचल से ही लिया जाता है। यह युवाओं के साथ ही इधर से गुजरने वाले दर्शनार्थियों को भी आकर्षित कर रहा है। यहां सेल्फी पॉइंट बनाने के बाद बड़ी संख्या में लोग पहुंच रहे हैं। वर्ष 2007 में भूगोल वेदों के एक दल ने यहां पहुंचकर विंध्याचल के अमरावती चौराहे के पास स्थित स्थल को मानक समय चिन्हित किया था।लंकाधिपति रावण भी अपनी ज्योतिष गणित की गणना के लिए विंध्याचल आता था। तब से लेकर अब तक विन्ध्य धरा का अमरावती चौराहे के पास का स्थल भारत का मानक समय रहा है। यह स्थान भारत की प्रधान मध्यान्ह रेखा एवं पृथ्वी की दूरी तथा व्यास आदि सहित भारतीय आध्यात्मिक जगत दरबार भी कहते हैं। महारानी मां बिंदुवासिनी अपने संपूर्ण कलाओं

के साथ यहां विद्यमान हैं। बिंदु के बिना एक छोटी रेखा भी नहीं खींची जा सकती और मां बिंदुवासिनी की कृपा के बिना सृष्टि की रचना नहीं हो सकती थी। रावण भी अपनी ज्योतिष गणना के लिए समय यही से लिया करता था। यही नहीं रावण ने यहां मां के मंदिर के समीप शिवलिंग की स्थापना की थी। जिसे बिंदेश्वर महादेव के नाम से जाना जाता है। जो आध्यात्मिक जगत के मानक समय का सूचक भी है।सेल्फी प्वाइंट बना आकर्षण का केंद्र विंध्याचल के अमरावती चौराहा परिवर्तन नाम अटल बिहारी वाजपेई चौराहा के पास स्थित अस्थल को मानक समय के स्थल को चिन्हित किया गया था। भारत का मानक समय (इंडियन स्टैंडर्ड्स टाइम्स) विंध्याचल से लिया जाता है। सटीक भौगोलिक स्थिति के खोजकर्ता साइंज पाल्युराइजेशन एसोसिएशन आफ कम्यूनिकेटस एंड एजूकेशन द्वारा इस स्थान को जिला प्रशासन की ओर से चैत्र नवरात्र के दौरान सेल्फी प्वाइंट बना दिया गया। देश के कोने कोने से आने वाले श्रद्धालु अपितु विदेशों से भी श्रद्धालु देवी धाम में दर्शन पूजन करने के पश्चात सेल्फी लेने के लिए प्रतिदिन सैकड़ों की संख्या में पहुंचे।

राष्टीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल पहुंचे मां विंध्यवासिनी धाम पहुंचकर किया दर्शन पूजन

(आधुनिक समाचार सेवा)

मीरजापुर।– राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार श्री अजीत डोभाल सपरिवार विंध्याचल पहुंच कर मां विंध्यवासिनी देवी का दर्शन पूजन किया। इस अवसर पर जिलाधिकारी दिव्या मित्तल,, पुलिस अधीक्षक संतोष कुमार मिश्र, नगर मजिस्ट्रेट उपस्थित रहे। श्री डोभाल को पुरोहितों के द्वारा मंत्रोच्चार के साथ दर्शन पूजन कराया गया, उनके विंध्याचल पहुंचने पर मंदिर परिसर में सुरक्षा को लेकर किए गए कड़े बंदोबस्त किए गए थे। तत्पश्चात सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल ने विंध्य कारीडोर का किया निरीक्षण। जिलाधिकारी दिव्या मित्तल ने विंध्य कारीडोर के प्रगति के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

मार्करम की वापसी से मजबूत होगी हैदराबाद लखनऊ टीम से जुड़ेंगे क्विंटन डी कॉक

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। 11। लखनऊ के इकाना स्टेडियम में लखनऊ सुपरजायंट्स और सनराइजर्स हैदराबाद के बीच आईपीएल 2023 का 10वां मुकाबला

खेला जाएगा। लखनऊ सुपरजायंट्स में जहां, क्विंटन डी कॉक की वापसी हो रही है। वहीं, सनराइजर्स हैदराबाद के कप्तान एडेन मार्करम टीम को ज्वाइन करेंगे। बता दें कि लखनऊ ने अपना पहला मुकाबला दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ 50 रन से जीता था, लेकिन जीत की गति को आगे बढ़ाने में असफल रहे। सुपरजायंट्स अपने अगले खेल में चेन्नई सुपर किंग्स से हार गए। लखनऊ की गेंदबाजी है घातक हालांकि, मार्क वुड और रवि बिश्नोई ने तीन-तीन विकेट चटकाए और बेहतरीन गेंदबाजी की। इसके बावजूद वह एनख् को 217 रन बनाने से नहीं रोक सके। काइल मेयर्स ने शीर्ष क्रम में 53 रनों की तेजतर्रार पारी खेली, लेकिन बड़ी साझेदारियों की कमी के कारण 12 रन से मैच हार गए। वे अपने अगले मैच में वापसी करना चाहेंगे। वापसी करना चाहेगी हैदराबाद वहीं, दूसरी ओवर सनराइजर्स को अपने ही घर में हार झेलनी पड़ी थी। उसने अपने शुरुआती मैच में राजस्थान रॉयल्स का सामना किया था और 72 रन से मुकाबला गंवाना पड़ा। पहले गेंदबाजी करते हुए, सनराइजर्स ने कुल मिलाकर 5 विकेट चटकाए, लेकिन स्कोरिंग रेट पर रोक लगाने में नाकाम रहे। जवाब में, अब्दुल समद ने सर्वाधिक नाबाद 32 रन बनाए, लेकिन अन्य बल्लेबाज योगदान देने में विफल रहे। सनराइजर्स को अपनी पहली जीत हासिल करने के लिए बेहतरीन प्रदर्शन करना होगा।लखनऊ सुपरजायंट्स की संभावित प्लेइंग इलेवनः केएल राहुल (कप्तान), काइल मेयर्स, दीपक हुड्डा, कृणाल पांड्या , क्विंटन डी कॉक/मार्कस स्टोइनिस, निकोलस पूरन (विकेटकीपर), कृष्णप्पा गौतम, मार्क वुड, रवि बिश्नोई, यश ठाकुर, आवेश खान सनराइजर्स हैदराबाद की संभावित प्लेइंग इलेवनः मयंक अग्रवाल, अभिषेक शर्मा, राहुल त्रिपाठी , एडेन मार्करम (कप्तान), हैरी ब्रूक, हेनरिक क्लासेन (विकेटकीपर), वाशिंगटन सुंदर, मार्को जानसन, भुवनेश्वर कुमार, टी नटराजन, उमरान मलिक।

आईपीएल 2023: के खिलाफ धमाकेदार प्रदर्शन करने वाले गेंदबाज के बारे में जानें सबकुछ

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर के लिए आईपीएल 2023 में मुश्किलें खत?म होने का नाम

ही नहीं ले रही हैं। इंग्लैंड के तेज गेंदबाज रीस टॉपली कंधे में चोट के कारण आईपीएल 2023 से बाहर हो गए हैं। आरसीबी के लिए खिताब जीतने की राह मुश्किल हो गई हैं क्योंकि टॉपली मौजूदा आईपीएल से बाहर होने वाले तीसरे खिलाड़ी बने। रीस टॉपली से पहले विल जैक्स और रजत पाटीदार टूर्नामेंट से बाहर हो गए हैं। आरसीबी के हेड कोच संजय बांगड़ ने गुरुवार को केकेआर के खिलाफ मैच के दौरान पुष्टि की है कि रीस टॉपली स्वदेश लौट गए हैं क्योंकि वो आगे टूर्नामेंट में हिस्सा नहीं ले सकेंगे। आरसीबी ने टॉपली को 1.9 करोड़ रुपये में खरीदा था। टॉपली की बेस प्राइस 75 लाख रुपये थी और उन्हें खरीदने के लिए मुंबई इंडियंस व चेन्नई सुपरकिंग्स ने भी दिलचस्पी दिखाई थी। संजय बांगड़ ने कहा, 'रीस को दुर्भाग्यवश स्वदेश लौटना पड़ा क्योंकि वो टूर्नामेंट से बाहर हो गए हैं। हमने उन्हें साथ रखने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास किया, लेकिन उपचार और विशेषज्ञों ने सलाह दी कि वो कुछ समय तक एक्शन से दूर रहेंगे। जल्द ही रीस टॉपली के विकल्प की घोषणा की जाएगी।' रीस टॉपली का करियर चोटों से परेशान रहा। हाल ही में वो टी20 वर्ल्ड कप से बाहर हुए थे क्योंकि अभ्यास मैच के पहले उनकी एड़ी में चोट लग गई थी। वो इसके अलावा कई सीरीज से चोट के कारण बाहर रहे।संजय बांगड़ ने साथ ही पुष्टि की है कि वनिंदु हसरंगा और जोश हेजलवुड क्रमशः 10 और 14 अप्रैल तक आरसीबी स्क्वाड से जुड़ेंगे। आरसीबी को अपना अगला मुकाबला 10 अप्रैल को लखनऊ के खिलाफ खेलना है। बांगड़ ने उम्मीद जताई कि इस मुकाबले में टीम को हसरंगा की सेवाएं मिलेंगी। आरसीबी के हेड कोच ने कहा, 'हसरंगा 10 अप्रैल को हमारे साथ जुड़ेंगे। उनके आने के समय पर निर्भर करेगा कि वो मैच में उपलब्ध हो पाएंगे या नहीं। मगर इस बीच कर्ण शर्मा ने अपने मौके का फायदा उठाया और चयन के लिए हमारे सामने सिरदर्दी बढ़ाई है।' हेजलवुड अपनी चोट से उबर चुके हैं और 17 अप्रैल को सीएसके के खिलाफ मैच के लिए उपलब्ध रह सकते हैं।

'वह बहुत फनी कैरेक्टर है आज तो उसने कमाल कर दिया'

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। कोलकाता नाईट राइडर्स ने आरसीबी को 81 रन से हराकर आईपीएल 2023 में अपनी पहली जीत हासिल की। पहला मैच गंवाने के बाद ने गजब की वापसी की। बल्लेबाजी में गुरबाज, शार्दुल ठाकुर और रिंकु सिंह ने बेहतरीन प्रदर्शन किया। इसके बाद गेंदबाजों ने आरसीबी की कमर तोड़ दी।

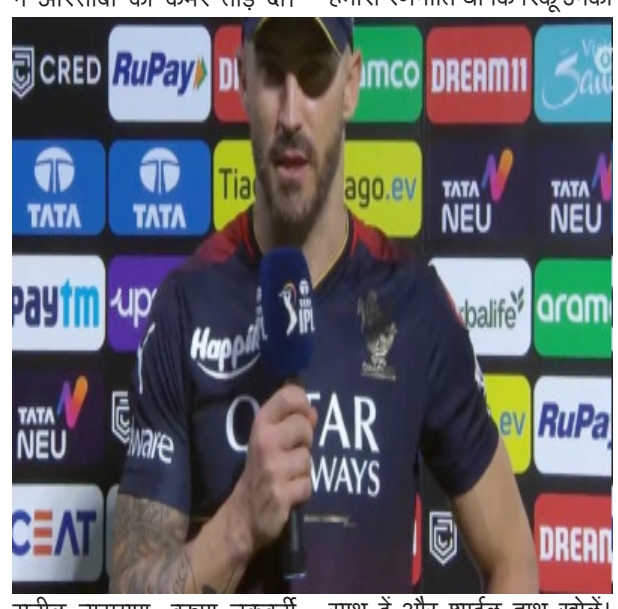

सुनील नारायण, वरुण चक्रवर्ती के बाद युवा स्पिनर सुयश ने तीन विकेट चटका लाइम लाइट में आ गए। कल तक कोई भी सुयश को नहीं जानता था। एक ही रात में सुयश हीरो बन गए। सुयश ने एक ही ओवर में दो विकेट लेकर सभी को चौंका दिया। मैच के बाद केकेआर के कप्तान नीतीश राणा ने भी उनकी जमकर तारीफ की। नीतीश ने कहा, सुयश दिल्ली का है, लेकिन मैं उसे कभी मिला नहीं था। वह बहुत फनी कैरेक्टर है और बहुत बोलता है। आज तो उसने कमाल कर दिया। बल्लेबाजों की तारीफ करते हुए राणा ने कहा, गुरबाज ने बेहतरीन बल्लेबाजी की और शार्दुल के बारे में जितना कहा जाए, उतना ही कम है। रिंकू ने भी उनका जबरदस्त साथ दिया। यही हमारी रणनीति थी कि रिंकू उनका साथ दें और शार्दुल हाथ खोलें। बता दें कि बेंगलुरु ने पहले मैच में बड़ी जीत दर्ज की थी। दूसरे में उन्हें बड़ी हार का सामना करना पड़ा। इस मैच को शार्दुल ठाकुर की बल्लेबाजी और तीन मिस्ट्री स्पिन गेंदबाजों के लिए याद किया जाएगा। 4 विकेट लेकर वरुण चक्रवर्ती ने कमाल की गेंदबाजी की, जबकि पहला मैच खेल रहे सुयश शर्मा ने इंपैक्ट प्लेयर के रूप में आकर गजब का इंपैक्ट छोड़ा।

रोहित शर्मा लेंगे चैन की सांस आईपीएल का सबसे शर्मनाक रिकॉर्ड अब केकेआर के खिलाड़ी के नाम

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। मुंबई इंडियंस के कप्तान रोहित शर्मा और रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर के विकेटकीपर बल्लेबाज दिनेश कार्तिक अब चैन की सांस लेंगे। कोलकाता नाइटराइडर्स के बल्लेबाज मंदीप सिंह ने आईपीएल का एक शर्मनाक रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया है। मंदीप सिंह गुरुवार को आईपीएल 2023 के 9वें मैच में आरसीबी के खिलाफ बिना खाता खोले आउट हुए। कोलकाता के ईडन गार्डन्स पर खेले गए मुकाबले में केकेआर ने पहले बल्लेबाजी की। मंदीप सिंह चौथे ओवर में वेंकटेश अय्यर के आउट होने के बाद क्रीज पर आए। मंदीप सिंह को विली ने पहली ही गेंद पर क्लीन बोल्ड कर दिया। मंदीप सिंह को विली की आउट स्विंग गेंद समझ नहीं आई और वो डिफेंस करने गए, लेकिन गेंद तब तक स्टंप ले उड़ी। मंदीप सिंह ने बिना खाता खोले आउट होकर एक शर्मनाक रिकॉर्ड अपने नाम दर्ज करा लिया है। मंदीप सिंह आईपीएल में सबसे ज्यादा बार शून्य पर आउट होने वाले बल्लेबाज बन गए हैं। यह 15वां मौका था जब मंदीप सिंह खाता खोलने में नाकाम रहे। मंदीप सिंह ने इस मामले में रोहित शर्मा और दिनेश कार्तिक को पीछे छोड़ा। रोहित-कार्तिक दोनों 14-14 बार बिना खाता खोले आउट हुए हैं। पीयूष चावला, हरभजन सिंह, पार्थिव पटेल, अजिंक्य रहाणे और अंबाती रायुडू 13 बार शून्य पर आउट होकर संयुक्त रूप से तीसरे स्थान पर काबिज हैं। वहीं राशिद खान, सुनील नरेन, ग्लेन मैक्सवेल, मनीष पांडे और गौतम गंभीर 12 बार बिना खाता खोले आउट हुए। अमित मिश्रा, रविचंद्रन अश्विन, एबी डिविलियर्स और शिखर धवन 10 बार बिना खाता

आउट होने वाले बल्लेबाज रहे मंदीप सिंह के बिना खाता खोले आउट होना केकेआर को जरा भी नहीं खला। कोलकाता नाइटराइडर्स ने आरसीबी को अपने होमग्राउंड पर आईपीएल 2023 के 9वें मैच में 81 रन के विशाल अंतर से मात दी। केकेआर ने पहले बल्लेबाजी की और 20 ओवर में 204/7 का स्कोर बनाया। जवाब में आरसीबी की टीम 17.4 ओवर में 123 रन पर ऑलआउट हो गई।

'हमने 20-25 रन एक्स्ट्रा दे दिए और औसत बल्लेबाज़ी की'

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। कोलकाता के ईडन गार्डन्स मैदान पर केकेआर ने आरसीबी को 81 रन से मात दी। पहले बल्लेबाजी करते हुए कोलकाता नाइट राइडर्स ने 7 विकेट के नुकसान पर 204 रन बनाए। जवाब में रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर 17.4 ओवर में 123 रन बनाकर ऑल आउट हो गई। केकेआर के स्पिन गेंदबाजों बेहतरीन प्रदर्शन किया। तीन स्पिनरों ने मिलकर आरसीबी के 9 विकेट लिए। हार के बाद रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर के कप्तान फॉफ डु प्लेसिस ने कहा, ठएक समय हम उन्हें सस्ते में आउट करने के करीब थे, लेकिन शार्दुल ने कमाल की पारी खेली। हमने 20-25 रन अतिरिक्त दिए। हमारी बल्लेबाजी बहुत औसत की रही।ठ डु प्लेसिस ने आगे कहा, ठउनके स्पिनरों ने हमें बेहतरीन ढंग से रोका। अगर हम उन्हें 160 तक रोकते, तो यह हमारा मैच होता। हम इस हार से सबक लेकर सीखने की कोशिश करेंगे।

केकेआरकी अपने होमग्राउंड पर हो जाती फजीहत, दो खिलाड़ियों ने पलटी बाजी,क्या रहा मैच का टर्निंग प्वाइंट

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। कोलकाता नाइटराइडर्स ने गुरुवार को आईपीएल 2023 के 9वें मैच में रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर को 81 रन के विशाल अंतर से मात दी। यह केकेआर की दो मैचों में पहली जीत रही। इससे पहले उसे पंजाब किंग्स के हाथों मोहाली में डकवर्थ लुईस पद्यति के आधार पर 7 रन की शिकस्त मिली थी। ईडन गार्डन्स पर कोलकाता नाइटराइडर्स ने पहले बल्लेबाजी की और निर्धारित 20 ओवर में 7 विकेट खोकर 204 रन बनाए। इसके बाद केकेआर के स्पिनर्स ने अपना जलवा बिखेरा और आरसीबी को 17.4 ओवर में 123 रन पर ढेर कर दिया। आरसीबी की मौजूदा आईपीएल में यह पहली शिकस्त रही। इससे पहले उसने मुंबई इंडियंस को मात देकर टूर्नामेंट की विजयी शुरुआत की थी। पहले बल्लेबाजी करने उतरी कोलकाता नाइटराइडर्स की हालत बेहद खराब थी। 89 रन के स्कोर

पर उसने पांच विकेट गंवा दिए थे। आरसीबी के गेंदबाज जिस लय में थे, उसे देखते हुए लग रहा था कि मेजबान टीम 150 रन के अंदर ही ऑलआउट हो जाएगी। मगर तब शार्दुल ठाकुर (68) और रिंकू सिंह (46) टीम के संकटमोचक बने। रिंकू सिंह के आउट होने के साथ इस साझेदारी का अंत हुआ। रिंकू सिंह ने 33 गेंदों में दो चौके और तीन छक्के की मदद से 46 रन बनाए। शार्दुल ठाकुर ने 29 गेंदों में 9 चौके और तीन छक्के की मदद से 68 रन बनाए। इनकी साझेदारी की मैच का टर्निंग प्वाइंट साबित हुई। केकेआर के स्पिनर्स ने एक पारी में सबसे ज्यादा विकेट लेने का रिकॉर्ड बना दिया है। वरुण चक्रवर्ती (4 विकेट), सुयष शर्मा (3 विकेट) और सुनील नरेन (2 विकेट) ने मिलकर 9 विकेट लिए। इससे पहले एक पारी में स्पिनर्स द्वारा सबसे ज्यादा विकेट लेने का रिकॉर्ड चेन्नई सुपरकिंग्स के नाम दर्ज था। सीएसके के स्पिनर्स ने 2012 में विशाखापट्टनम में दिल्ली के खिलाफ 8 विकेट चटकाए थे। फिर सीएसके के स्पिनर्स ने 2019 में चेन्नई में आरसीबी के खिलाफ 8 विकेट लिए थे। इसी प्रकार सीएसके के स्पिनर्स ने 2019 में दिल्ली के खिलाफ भी 8 विकेट लिए थे।

सुनील नरेन के लिए आरसीबी के खिलाफ मुकाबला बना यादगार

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। कोलकाता नाइटराइडर्स के ऑलराउंडर सुनील नरेन ने गुरुवार को रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर के खिलाफ मुकाबले में उतरते ही विशेष उपलब्धि हासिल की। सुनील

नरेन आईपीएल में अपना 150वां मुकाबला खेल रहे हैं। नरेन ने इसी के साथ दिग्गजों के क्लब में अपनी जगह पक्की कर ली है। सुनील नरेन आईपीएल में 150 या ज्यादा मैच खेलने वाले चौथे विदेशी खिलाड़ी बन गए हैं। आईपीएल में बतौर विदेशी खिलाड़ी सबसे ज्यादा मैच खेलने का रिकॉर्ड किरोन पोलार्ड के नाम दर्ज है। किरोन पोलार्ड ने 189 मैच खेले हैं। इस लिस्ट में दूसरे स्थान पर आरसीबी के पूर्व बल्लेबाज एबी डिविलियर्स काबिज हैं। एबीडी ने 184 मैच खेले हैं। दिल्ली कैपिटल्स के कप्तान डेविड वॉर्नर 164 मैचों में साथ आईपीएल में सबसे ज्यादा मैच खेलने वाले तीसरे विदेशी खिलाड़ी हैं। सुनील नरेन इन दिग्गजों के क्लब में शामिल हुए, जिन्होंने अपना 150वां मैच खेला। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व ऑलराउंडर शेन वॉटसन 145 मैचों के साथ टॉप-5 की लिस्ट को पूरा करते हैं। सुनील नरेन विराट कोहली के दिग्गज क्लब में भी शामिल हुए। सुनील नरेन आईपीएल में सातवें खिलाड़ी बने, जिन्होंने एक फ्रेंचाइजी के लिए 150 या ज्यादा मैच खेले हैं। आईपीएल में एक फ्रेंचाइजी के लिए सबसे ज्यादा मैच खेलने वाले खिलड़ियों में टॉप पर किंग कोहली काबिज हैं। विराट कोहली ने आरसीबी के लिए 225 मैच खेले हैं। चेन्नई सुपरकिंग्स के कप्तान एमएस धोनी इस लिस्ट में दूसरे स्थान पर जमे हुए हैं। धोनी ने सीएसके के लिए 206 मैच खेले हैं। पूर्व ऑलराउंडर किरोन पोलार्ड इस लिस्ट में तीसरे स्थान पर हैं। पोलार्ड ने मुंबई इंडियंस के लिए 189 मैच खेले हैं। मुंबई इंडियंस के कप्तान रोहित शर्मा 183 मैचों के साथ इस लिस्ट में चौथे स्थान पर हैं। सीएसके के लिए सुरेश रैना ने 176 मैच खेले और वो टॉप-5 की लिस्ट को पूरा करते हैं। एबी डिविलियर्स (156 मैच) और सुनील नरेन सातवें स्थान पर हैं। सुनील नरेन ने आईपीएल में 150 मैचों में 4 अर्धशतक की मदद से अब तक 1032 रन बनाए हैं। उनका स्ट्राइक रेट 163.39 का रहा। उन्होंने 150 मैचों में 153 विकेट लिए हैं। नरेन ने सात बार एक पारी में चार विकेट लिए और एक बार पारी में पांच विकेट लेने का कमाल किया है।

केकेआर के लिए मास्टर स्ट्रोक बना शार्दुल ठाकुर

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। कोलकाता नाइटराइडर्स के ऑलराउंडर शार्दुल ठाकुर ने गुरुवार को आईपीएल 2023 के 9वें मैच में रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर के खिलाफ तेजतर्रार अर्धशतक जमाकर सुर्खियां बटोरी। ठाकुर ने केवल 29 गेंदों में 9 चौके और तीन छक?के की मदद से 68 रन बनाए। ठाकुर की पारी की बदौलत केकेआर ने ईडन गार्डन्स पर खेले जा रहे मुकाबले में 20

ओवर में 7 विकेट खोकर 204 रन बनाए शार्दुल ठाकुर जब क्रीज पर आए तब केकेआर 89/5 के स्कोर के साथ संघर्ष कर रही थी। लग नहीं रहा था कि टीम 150 का आंकड़ा भी पार कर पाएगी। तब शार्दुल ठाकुर ने रिंकू सिंह (46) को साथ लिया और आरसीबी के गेंदबाजों की बखिया उधेड़ते हुए टीम को विशाल स्कोर तक पहुंचाया दोनों बल्लेबाजों ने छठे विकेट के लिए 103 रन की शतकीय साझेदारी की। शार्दुल ठाकुर की पारी ने फैंस का भरपूर मनोरंजन किया ।

राशिफल

मेष-:तली-भुनी चीजों से दूर रहें और नियमित व्यायाम करते रहें. घरेलू सुख-सुविधा की चीज़ों पर ज़रूरत से ज़्यादा खर्च़ न करें। पिता का तल्ख बर्ताव आपको नाराज़ कर सकता है।

वृष-:जीवन की सभी कठिन परिस्थितियों में आपको अपने माता-पिता का पूरा सहयोग मिलेगा. जो लोग प्रेम के मोर्चे पर मायूस महसूस कर रहे हैं।

मिथुन-:क्षणिक क्रोध विवाद और दुर्भावना का कारण बन सकता है. मनोरंजन और सौन्दर्य वृद्धि पर आवश्यकता से अधिक समय व्यतीत न करें।

कर्क-:आज सभी ग्रह और सितारे आपके पक्ष में हैं, आप जिस भी काम में हाथ डालेंगे, उसमें आपको सफलता जरूर मिलेगी. आज के दिन यात्रा की योजना बन सकती है।

सिंह-:आपकी इच्छा शक्ति को प्रोत्साहन मिलेगा, क्योंकि आप बहुत उलझी हुई परिस्थितियों से निकलने में क़ामयाब रहेंगे. भावनात्मक फैसले लेते समय अपनी तार्किकता को न छोड़ें।

कन्या-:प्रेम के मामले में सफलता मिलेगी. नए कार्यों की शुरुआत करना शुभ रहेगा। आज अपने प्रिय के साथ अपनी व्यक्तिगत भावनाओं और गोपनीय मामलों को साझा करने का सही समय है।

तुला-: जो लोग आपके पास कर्ज के लिए आते हैं, बेहतर होगा आप उन्हें नजरंदाज करें. पारिवारिक मोर्चे पर चीज़ें अच्छी रहेंगी और आप अपनी योजनाओं को पूरा समर्थन मिलने की उम्मीद कर सकते हैं।

वृश्चिक-:छात्रों के लिए दिन अनुकूल है क्योंकि प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता मिल सकती है। जमीन-जायदाद संबंधी कार्य स्थगित करना आपके हित में रहेगा।

धनु-:इससे पहले कि नकारात्मक विचार मानसिक रोग का रूप लें, आपको उन्हें समाप्त कर देना चाहिए. आप किसी परोपकारी कार्य में हिस्सा लेकर ऐसा कर सकते हैं।

मकर-:लंबे समय से चली आ रही दिक्कतों से आज आपको छुटकारा मिल सकता है. आगे बढ़ने के बजाय अपने सभी आगामी कार्यों को पूरा करना ही समझदारी होगी।

कुंभ-:भावनात्मक रूप से बहुत अच्छा दिन नहीं रहेगा. आर्थिक समस्याओं के कारण आपको आलोचना और वाद-विवाद का सामना करना पड़ सकता है।

मीन-:आज आप सकारात्मक ऊर्जा से भरपूर रहेंगे, जिसका असर आपके आसपास के लोगों पर भी पड़ेगा. खुद के काम से समय निकालकर परिवार के साथ अधिक समय बिताना संभव नहीं होगा।

सम्पादकीय

सीबीआई की साख

सीबीआई डायरेक्टर सुबोध कुमार जायसवाल ने सुप्रीम कोर्ट में जो हलफनामा दायर किया है, उससे न केवल इस जांच एजेंसी के कामकाज की मौजूदा स्थिति स्पष्ट होती है बल्कि उन अड़चनों का भी पता चलता है जिनका इसे सामना करना पड़ता है। एक मामले की सुनवाई करते हुए जस्टिस एस के कौल और जस्टिस एम एम सुंद्रेश की बेंच ने तीन सितंबर को कहा था कि सीबीआई चीफ एजेंसी के कामकाज का पूरा ब्योरा पेश करें ताकि यह अंदाजा मिल सके कि पिछले दस वर्षों के दौरान मामले दर्ज करने और उन्हें सुलझाने के मामले में एजेंसी कितनी कामयाब या नाकाम रही है। हलफनामे पर गौर करने से स्पष्ट होता है कि 2011 से अब तक की अवधि में सीबीआई द्वारा दर्ज मामलों में कन्विक्शन रेट 65 से 70 फीसदी के बीच है।

ज्यादा सटीकता से कहा जाए तो 2011 से 2014 तक कन्विक्शन रेट 67 फीसदी से 69 फीसदी तक पहुंचाई जा सकी, उसके बाद 2015 में अचानक यह गिरकर 65.1 फीसदी पर आ गई, जो धीरे-धीरे बढ़ते हुए 2020 में 69.8 फीसदी तक आई। साल 2015 में आई इस अचानक गिरावट की वजहें साफ नहीं हो पाईं, लेकिन ज्यादा महत्वपूर्ण बात यह है कि सीबीआई चीफ इसे अगले साल ही 75 फीसदी तक ले जाने का इरादा रखते हैं। बहरहाल, पहली नजर में कन्विक्शन दर के मौजूदा आंकड़े भी कम नहीं कहे जा सकते। खासकर तब जब एनसीआरबी (नैशनल क्राइम रेकॉर्ड ब्यूरो) के आंकड़ों के मुताबिक, आईपीसी के तहत दर्ज किए गए मामलों में कन्विक्शन रेट 2020 में 59.2 फीसदी ही है।

वैसे जानकार सीबीआई चीफ के इस हलफनामे में दिए गए तथ्यों पर भी सवाल उठाते हैं। उनके मुताबिक यह स्पष्ट नहीं है कि हलफनामे में कन्विक्शन रेट तय करने का आधार ऊपरी अदालतों के अंतिम निणय्न को बनाया गया है या निचली अदालतों के शुरुआती फैसलों को। इसी तरह यह भी साफ नहीं है कि एक मामले के विभिनन् आरोपियों पर दिए गए फैसले को अलग-अलग देखा गया है या समग्रता में? जाहिर है कि सीबीआई के कामकाज की तस्वीर काफी हद तक इस तरह के डीटेल्स पर निर्भर करती है।

हलफनामे में अदालतों से स्टे ऑर्डर जारी किए जाने और कई राज्यों द्वारा सीबीआई को मिली जांच करने की आम इजाजत वापस लिए जाने जैसी अड़चनों का भी जिक्र है, जो कुछ हद तक जायज हैं। मगर जहां तक संपूर्णता में इस जांच एजेंसी की विश्वसनीयता का सवाल है तो यह मानना होगा कि कुछ मामलों में सही ढंग से काम करने और कुछ अन्य मामलों में ढिलाई बरतने से विश्वसनीयता नहीं हासिल हो सकती। जिस तरह से कई हाई प्रोफाइल मामलों में सरकार के इशारे पर यह एजेंसी अपना रुख तय करती है, वह इसकी साख बनने की राह में सबसे बड़ा रोड़ा है। इसलिए इसे स्वायत्त बनाना होगा।

क्यों कोई किसी सारस को बचाए, पेटा जैसे संगठनों ने जानवरों को पालना ही बना दिया है अपराध

उत्तर प्रदेश के अमेठी में रहने वाले एक युवक आरिफ और उसका सारस बीते दिनों बड़ी चर्चा में रहे। यह सारस आरिफ को घायल अवस्था में मिला था। उसने सारस का इलाज किया, उसे ठीक किया, फिर वे दोनों दोस्त बन गए। इसका एक वीडियो वायरल हुआ और वन विभाग जीव संरक्षण अधिनियम के तहत सारस को जबरन अपने साथ ले गया। बाद में सारस को चिड़ियाघर भेज दिया गया। चिड़ियाघर में सारस का रहना उचित है और घर में रहने पर बंदिश है। क्यों? क्या पशु-पक्षियों को पालने, उन्हें दुलारने, उनसे बच्चों की तरह प्यार करने वाले लोग नहीं पाए जाते। हमारा पूरा लोक साहित्य, धार्मिक ग्रंथ, भित्ति चित्र और पेंटिंग्स ऐसे चित्रों से भरे पड़े हैं। यह बात समझ से परे है कि कानून अक्सर कठोरता की लाठी से लोगों को पीटता है। वह अच्छे-बुरे का भेद भी नहीं करता। अरे भाई, जो पशु-पक्षियों को सताते हैं, उन पर ऐसा कानून लागू करो। जो उन्हें पालते हैं, देखभाल करते हैं, उन पर यह लाठी क्यों चलती है? कानूनों की इतनी अधिक अति होती है कि लोग उन्हें मानने से इन्कार करते या हिचकने लगते हैं। यदि सारस, तोते, भालू और बंदर आदि पालना गलत और अपराध है, तो गायों, भैंसों, बकरियों, मुर्गियों, तीतरों, भेड़ों, घोड़ों, गधों, कुत्तों, खरगोशों, कछुओं, गिलहरियों, बहुत सी चिड़ियों और बिल्लियों आदि को पालना कैसे उचित है? उन पर यह कानून क्यों लागू नहीं होता या कि कानून जहां उपयोगिता देखता है, वहां से आंखें मूंद लेता है। जानवरों की इतनी ही चिंता है तो सड़कों पर जो इतने निरीह जानवर छोड़ दिए जाते हैं, उनका क्या? वे अनेक मामलों में भीषण दुर्घटनाओं का शिकार होते हैं, बल्कि दुर्घटनाओं का कारण भी बनते हैं, उनकी चिंता क्यों नहीं? और वे जानवर जैसे कि बकरे, भेड़ें, मछलियां, मुर्गे जो खाने के लिए मार दिए जाते हैं, उनकी रक्षा क्यों नहीं करते? सबसे

पहले उन कसाईघरों से जानवरों को मुक्त कराइए, जिन्हें हर रोज करोड़ों की संख्या में मारा जाता है। उनका जीवन क्या आरिफ के सारस से कम कीमती है। फिर चिड़ियाघरों में भी जानवर कितने स्वतंत्र होते हैं, वहां उन्हें रखना घर के मुकाबले क्यों उचित है? अपने देश में अनेक जगहों पर हर साल साइबेरिया से प्रवासी पक्षी आते हैं। बहुत साल पहले एक पत्रकार मित्र ने बताया था कि जिन लोगों को इनकी रक्षा के लिए रखा जाता है, उनमें से ही कई इन्हें मार देते हैं। न केवल खुद इनका मांस खाते हैं, बल्कि महंगे दामों पर बेचते हैं। एक तरह से रक्षक ही भक्षक बन जाते हैं। यदि यह बात सच है तो ऐसे लोगों पर क्या कार्रवाई हुई या ऐसी बातों से कानून भी आंखें मूंदकर रखता है? आरिफ के लिए तो थानेदार बनकर आ गए, उसकी एक न सुनी और उसके सारस को छीनकर ले गए। जब सारस बुरी तरह से घायल था, चोट से मर सकता था, तब कोई उसे बचाने नहीं आया। मान लिया गया कि यह तो आरिफ की जिम्मेदारी और कर्तव्य था। जब सारस ठीक हो गया तो इस पर वन विभाग, चिड़ियाघर और न जाने किस-किस का अधिकार हो गया। यानी अब शायद ही कोई इस तरह से घायल और जीवन की अंतिम सांसें गिनते किसी पक्षी को बचाएगा तो उसे आरिफ की तरह कानूनी कार्रवाई झेलनी पड़ेगी। होम करते हाथ जलेगा। आखिर आरिफ का क्या कुसूर है? क्या उसने सारस को सताया। उसे पिंजरे में रखा? कुछ लोग कह रहे हैं कि ठीक हो जाने के बाद आरिफ को खुद ही सारस वन विभाग को सौंप देना चाहिए था। यह भी तो संभव है कि उसे इस कठोर कानून की जानकारी ही न हो। जरूरी तो नहीं कि सब हर एक कानून को जानते हों। एक तरह से वन विभाग और पेटा जैसे संगठनों ने जानवरों को पालना ही अपराध बना दिया है। ऐसे कानून सिर्फ भारत में ही बनाए जा सकते हैं, जहां बिना कुसूर भी किसी को अपराधी ठहराया जा सके। मानवीय पक्ष, दया ममता को देखने, उस पर विचार करने की जैसे कोई गुंजाइश ही नहीं। मैं विदेशों में पालतू जानवरों के अद्भुत वीडियो अक्सर देखती हूं। वहां की ऐसी कई दुकानें भी देखी हैं, जहां बहुत से पशु-पक्षी ही नहीं छिपकली, गिरगिट और गोह जैसे जानवर मिलते हैं। लोग इन्हें खूब पालते हैं। कुछ दिन पहले एक और खबर पढ़ी थी कि विदेश में कहीं एक आदमी को नदी किनारे एक घायल मगरमच्छ मिला था। वह उसे घर ले आया। उसका इलाज किया। जब वह ठीक हो गया, तो वापस नदी में छोड़ आया। अगले दिन सवेरे जब उस आदमी ने अपना दरवाजा खोला, तो मगरमच्छ बरामदे में सो रहा था। अच्छा है कि यह आदमी भारत में नहीं था। विदेश में ऐसा होता तो शायद बोर्न फ्री सीरीज की तीन अभूतपूर्व किताबें भी न लिखी जातीं। न ब्लैक ब्यूटी, ब्लिट्ज जैसे घोड़ों के जीवन पर लिखे बेहद मार्मिक उपन्यास ही प्रकाश में आते। बहुत साल पहले दिल्ली में मैं दरियागंज की तरफ जा रही थी। वहां एक आदमी जूते सिल रहा था। उसके पास ही बोरी पर एक बंदर सो रहा था। अचानक तेज बारिश आ गई। उस आदमी ने फौरन अपनी छतरी खोली और बंदर पर तान दी। खुद बारिश में भीगता रहा। आजकल तो इस चिंता और प्यार को भी किसी अपराध की तरह देखा जाता है। बचपन में कितने लोग बंदर और भालू का नाच दिखाने आते थे। सपेरे आते थे, जो कोबरा को अपनी बीन की धुन पर सिर हिलाते दिखाते थे। इस बहाने उनकी रोजी-रोटी चलती थी। वे अपने पालतू जानवरों का खूब ख्याल रखते थे। आज ये कहीं दिखाई नहीं देते। क्या पता काम न रहने से भीख मांगते हों।

भाजपा सरकार के साथ क्यों ना हो महिलाएं - नीता वाजपेई

(आधुनिक समाचार सेवा)

नोएडा। भारतीय जनता पार्टी का 44वां स्थापना दिवस है, सभी देशवासियों को और हम सभी कार्यकर्ताओं को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं। हम लोकसभा चुनाव की बात करें या विधानसभा चुनाव की बात करें भारतीय जनता पार्टी के जीत के पीछे भारतीय महिलाओं का बहुत बड़ा योगदान माना जाता है और माना जाता रहेगा, जिस तरह से भारतीय महिलाओं ने मोदी सरकार को खुले दिल से समर्थन दिया है और आगे भी देती रहेंगी उसी प्रकार मोदी सरकार ने भी महिलाओं के उत्थान और मान-सम्मान के लिए कार्य किया है और कार्य करने के लिए कटिबद्ध है। महिलाओं के लिए भारत सरकार ने बहुत सारी योजनाओं को धरातल पर उतारा है और आगे उतारने के लिए प्रयासरत है। केंद्र सरकार ने महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए अनेकों कार्य किए हैं और करने के लिए रोड मैप भी तैयार किया है। महिलाओं के उत्थान ,सम्मान और समाज में अपनी जगह बनाने आदि के लिए मोदी सरकार ने आगे बढ़कर योजनाओं और कानून के द्वारा महिलाओं का हर संभव सहयोग किया है और महिलाओं को आगे ले जाने के लिए कटिबद्ध है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की सोच बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ ने महिलाओं के मन में मोदी जी के लिए मान सम्मान और बढ़ा दिया। इसको लेकर महिलाओं ने मोदी जी को अपना मान लिया और महिलाओं का मोदी जी के साथ दिल का रिश्ता बन गया। अगर हम तीन तलाक की बात करें तो इस कानून ने भी भारतीय महिलाओं को एक सम्माननीय स्थान दिलाने में अग्रणी भूमिका निभाई है। हम लिंगानुपात की बात नहीं भूल सकते, जिसका परिणाम यह है की महिलाओं की संख्या में उत्साहवर्धक वृद्धि हुई है। गर्भवती महिलाओं के लिए जननी सुरक्षा योजना ,लाडली लक्ष्मी

योजना,फ्री सिलाई मशीन योजना, मुद्रा लोन योजना यह साभी योजनाएं महिलाओं को सशक्त बनाने और उन्हें समाज में एक अहम् स्थान दिलाने मैं बड़ी भूमिका निभा रही है मैं एक बात जरुर कहना चाहूंगी कि महिलाओं को अपनी पहचान खुद से खुद को कराने में मोदी सरकार की अहम भूमिका रही है वैसे तो बहुत सारे कानून, योजनाएं मोदी सरकार ने महिलाओं के लिए बनाए हैं जिससे मैं कुछ योजनाओं के बारे में चुकी हूं। कुछ और मैं बताने की कोशिश कर रही हूं, जिसको धरातल पर उतारने के लिए मोदी सरकार ने एक बहुत बड़ी टीम तैयार की है इन योजनाओं को एक-एक महिला तक पहुंचाने में भाजपा महिला मोर्चा का बहुत बड़ा योगदान रहा है और आगे भी जारी रहेगा। इन योजनाओं में से कुछ योजनाओं का नाम मैं यहां पर बताना चाहूंगी। 1 प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना। 2 प्रधानमंत्री मुद्रा योजना। 3 सपोर्ट टू ट्रेनिंग एंड एंप्लॉयमेंट प्रोग्राम फॉर विमेन.. (एसटीपी)। 4 राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम। 5 प्रधानमंत्री सुकन्या समृद्धि योजना। 6 महिला सम्मान बचत योजना। 7 सरकार इस मार्केटिंग। 8 प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम। 9 समग्र पोषण के लिए प्रधानमंत्री की व्यापक योजना। 10 उद्यम सखी योजना। 11 प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना। 12 प्रधान मंत्री विद्या लक्ष्मी कार्यक्रम। 13 श्रम कार्ड। 14 स्वच्छ भारत अभियान शौचालय योजना। 15 प्रधानमंत्री आवास योजना। आदि कुछ योजनाएं हैं जिनको धरातल पर उतारने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी प्रतिबंध है और इनको धरातल पर उतारने के लिए कार्यक्रम की शुरुआत भी हो चुकी है। जिस मोदी सरकार ने इतनी सारी योजनाएं, इतने सारे कार्यक्रम हम महिलाओं के लिए चलाएं हो और कोशिश की हो कि हर महिला तक इन योजनाओं का लाभ मिले और हर बहन समाज में सम्मान से अपना सर उठा कर पुरुषों के बराबर कदम से कदम मिलाकर चल सके फिर मोदी सरकार के साथ हम महिलाएं खड़ी क्यों ना हो।

सांसद राघव चड्ढा ने राज्यसभा में निजी सदस्य प्रस्ताव किया पेश, न्यायिक स्वतंत्रता को मजबूती देने का अनुरोध

आम आदमी पार्टी के राज्यसभा सांसद राघव चड्ढा ने उच्च सदन में एक निजी सदस्य प्रस्ताव पेश किया जिसमें भारत सरकार से देश में न्यायिक स्वतंत्रता को मजबूत करने के लिए आवश्यक कदम उठाने का आग्रह किया गया है। प्रस्ताव में इस तथ्य पर प्रकाश डाला गया है कि भारत के संविधान में 99वें संशोधन और राष्ट्रीय न्यायिक नियुक्ति आयोग अधिनियम, 2014 को 2016 में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा संविधान के अधिकार से बाहर माना गया था। भारत के मुख्य न्यायाधीश के परामर्श से सर्वोच्च न्यायालय और उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की नियुक्ति की प्रक्रिया में सरकार को मौजूदा ज्ञापन को पूरक करने का निर्देश दिया था। हालांकि, प्रक्रिया के मौजूदा ज्ञापन के पूरक के लिए अभी तक कोई कदम नहीं उठाए गए हैं। संकल्प भारत सरकार से भारत के सर्वोच्च न्यायालय और उच्च न्यायालयों में न्यायाधीशों की नियुक्ति के संबंध में सर्वोच्च न्यायालय के बाध्यकारी निर्णयों के अनुसार सख्ती से कार्य करने का आह्वान करता है। प्रस्ताव आगे सरकार से न्यायाधीशों की नियुक्ति के लिए प्रक्रिया के ज्ञापन को शीघ्रता से अंतिम रूप देने और न्यायपालिका की स्वतंत्रता सुनिश्चित करने के लिए कुछ उपायों इन उपायों में यह प्रावधान शामिल है कि सरकार की सभी टिप्पणियों, जिसमें खुफिया जानकारी भी शामिल है, को कॉलेजियम द्वारा सिफारिश किए जाने के 30 दिनों के भीतर कॉलेजियम को प्रस्तुत किया जाना चाहिए और इस तरह के सभी अवलोकन, टिप्पणियां और इनपुट प्रासंगिक और आवश्यक होने चाहिए एवं बाहरी या

अनावश्यक पहलुओं पर आधारित न हों। इस प्रावधान के अनुसरण में, सरकार को या तो कॉलेजियम की सिफारिश को स्वीकार करना चाहिए या उसी 30 दिनों की अवधि के भीतर सिफारिश को पुनर्विचार के लिए वापस कर देना चाहिए। यदि सरकार इस अवधि के भीतर कार्य करने में विफल रहती है, तो नियुक्ति का नोटिस जारी करने के लिए कॉलेजियम की सिफारिश को भारत के राष्ट्रपति को भेजा जाना चाहिए।संकल्प यह भी प्रदान करता है कि यदि सरकार पुनर्विचार के लिए कॉलेजियम को सिफारिश वापस करती है और कॉलेजियम सिफारिश को दोहराता है, तो सचिव, न्याय विभाग, 15 दिनों के भीतर नियुक्ति का नोटिस जारी करने के लिए भारत के राष्ट्रपति को सिफारिश भेजेगा। संकल्प में उल्लेख किया गया है कि भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने आगे निर्देश दिया था कि भारत सरकार देश के मुख्य न्यायाधीश के परामर्श से सर्वोच्च न्यायालय और उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की नियुक्ति के लिए प्रक्रिया के मौजूदा ज्ञापन को अंतिम रूप दे सकती है। इसके अलावा, यह (संकल्प) तर्क देता है कि भारत सरकार द्वारा प्रक्रिया के मौजूदा ज्ञापन मेमोरेंडम ऑफ प्रोसीजर को पूरा करने के लिए अभी कदम उठाए जाने बाकी हैं। इसी तरह, इसमें कहा गया है कि जिन न्यायाधीशों के नामों की सिफारिश की गई है और बाद में भारत के सर्वोच्च न्यायालय के कॉलेजियम द्वारा दोहराया गया है, उनकी नियुक्ति की प्रक्रिया भारत के सर्वोच्च न्यायालय बार एसोसिएशन बनाम भारत संघ (1993) 4 एससीसी 441 और विशेष संदर्भ संख्या 1 1998 (1998) 7 एससीसी 739 को समय पर पूरा करने की आवश्यकता है।प्रस्ताव में जोर दिया गया है कि न्यायिक स्वतंत्रता भारत के संविधान की मूल संरचना का एक हिस्सा है और इससे किसी भी तरह से समझौता नहीं किया जा सकता है। न्यायाधीशों की नियुक्ति में कार्यपालिका का हस्तक्षेप न्यायिक स्वतंत्रता के विपरीत है, खासकर तब जब भारत सरकार भारतीय अदालतों के सामने सबसे बड़ी वादी है।

ऑक्सफैम इंडिया के खिलाफ होगी सीबीआई जांच, अमित शाह के निर्देश पर गृह मंत्रालय ने लिखा पत्र

विदेशी अनुदान के दुरूपयोग के आरोप में घिरे एनजीओ आक्सफैम इंडिया के खिलाफ सीबीआइ की जांच होगी। गृहमंत्री अमित शाह के निर्देश पर गृह मंत्रालय ने सीबीआइ को जांच के लिए पत्र लिखा है। आक्सफैम इंडिया पर एफसीआरए नियमों का उल्लंघन कर भारत स्थित कई एनजीओ की फंडिंग का आरोप है। उच्च पदस्थ सूत्रों के अनुसार, पिछले साल आक्सफैम इंडिया के ठिकानों पर हुए आयकर विभाग के सर्वे में विदेशी अनुदान के दुरुपयोग के कई सबूत मिले थे। आयकर विभाग ने इससे गृह मंत्रालय को अवगत करा दिया। जब मामले को अमित शाह के सामने लाया गया तो उन्होंने साफ कर दिया कि एफसीआरए नियमों का उल्लंघन एक गंभीर अपराध है और इसकी गहराई से जांच होनी चाहिए। इसके बाद मामले को सीबीआइ के पास जांच के लिए भेज दिया गया। सूत्रों के अनुसार, एफसीआरए नियमों में 2020 में संशोधन कर विदेशी अनुदान के किसी दूसरे एनजीओ को ट्रांसफर करने पर रोक लगा दी गई थी। विदेशी अनुदान का सिर्फ सामाजिक

काम के लिए उपयोग किया जा सकता है, जिसके लिए वह दिया गया है। लेकिन इसके बावजूद आक्सफैम इंडिया विदेशों से मिले अनुदान को सेंटर फार पालिसी रिसर्च (सीपीआर) और पूर्व आइएएस अधिकारी हर्ष मंदर के एनजीओ अमन बिरादरी को फंड ट्रांसफर किया था। मालूम हो कि बिना एफसीआरए लाइसेंस के विदेशी अनुदान लेने और उसका दुरुपयोग करने के आरोप में हर्ष मंदर और उनके एनजीओ के खिलाफ जांच के लिए सीबीआइ को गृह मंत्रालय पहले ही कह चुका है। इसी तरह से विदेशी अनुदान के दुरूपयोग के आरोप में सीपीआर का एफसीआरए लाइसेंस छह महीने के लिए निलंबित किया जा चुका है वहीं, आक्सफैम इंडिया का एफसीआरए लाइसेंस के नवीनीकरण से गृहमंत्रालय पहले ही इनकार कर चुका है। सूत्रों के अनुसार, आक्सफैम इंडिया ने सीपीआर को फंड अपने कर्मचारियों और सहयोगियों के नाम पर ट्रांसफर किये थे। वित्तीय वर्ष 2019-20 के आक्सफैम इंडिया के टीडीएस डाटा में इस तरह के 12,71,188 रुपये के ट्रांसफर करने के सबूत भी हैं इसी तरह से नियम के मुताबिक, भारत में एनजीओ को एसबीआइ के विशेष एफसीआरए एकाउंट में विदेशी अनुदान लेने का नियम है। इसके बावजूद आक्सफैम इंडिया ने एफसीआरए एकाउंट के बजाय सीधे अपने फारेंस करेंसी यूटिलाइजेशन एकाउंट में 1.5 करोड़ रुपये लिए थे। यही नहीं, आयकर विभाग के सर्वे में मिले दस्तावेजों से साफ हो गया है कि आक्सफैम इंडिया को विदेश स्थित उन संस्थाओं से कई सालों तक अनुदान मिलते रहे, जो दूसरे देशों की विदेशी नीति को प्रभावित करने की कोशिश करते रहे हैं।

संक्षिप्त समाचार

भाजपा सोशल मीडिया संयोजक का हुआ जोरदार स्वागत

(आधुनिक समाचार सेवा)

नोएडा। प्रभु श्री हनुमान जन्मोत्सव पर नोएडा के छिजारसी में राष्ट्रीय हिन्दू शेर सेना द्वारा आयोजित जागरण व भंडारे में शाम को नोएडा सोशल मीडिया संयोजक शिवांश श्रीवास्तव 'सरजी' का शेर सेना के कार्यकर्ताओ ने अध्यक्ष जय कारण कुशवाहा के नेतृत्व में भव्य स्वागत किया गया। कार्यक्रम में शिवांश सिरजी अपने मण्डल संयोजक पंकज त्रिपाठी व सह संयोजक चेतन कपूरवान, पंकज पोरवाल आदि के साथ पहुंचे। लगभग एक घंटे वहा रहने पर जिला संयोजक ने हनुमान

जी व माता रानी के जगराते में भजनो को सुना व प्रसाद वितरण में सहयोग भी किया साथ ही जय करण, महेंद्र, रवि, मनोज व समस्त शेर सेना के उपस्थित कार्यकर्ताओ को इस सफल आयोजन के लिए बधाई भी दी?। लगभग 2000 से ज्यादा लोगो ने भंडारे में प्रसाद ग्रहण किया। आयोजन पर शिवांश सिरजी ने बताया की नव चेतना व सरसता के इस पर्व में सबको बधाई विशेष प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी व मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी का आभार जिन्होंने उत्तर प्रदेश में कानून व्यवस्था को चाक चौबंद किया जिसकी वजह से प्रदेश में समस्त संप्रदाय के पर्व हर्षल्लास व सौहार्द से मनाये जा रहें हैं।

सिद्धपीठ संकट मोचन बालाजी धाम में धूम धाम से मनाया गया श्री हनुमान जन्मोत्सव

(आधुनिक समाचार सेवा)

नोएडा। नंगली बाजिदपुर गांव के पुश्तापार सेक्टर 135 स्थित सिद्धपीठ संकटमोचन बालाजी धाम में श्री हनुमान जी का जन्मोत्सव महंत मुकेशानंद महाराज जी के सानिध्य में धूमधाम से मनाया गया। बुधवार से मंदिर परिसर में अखंड पाठ का आयोजन किया गया जिसका विराम गुरुवार को हुआ।

समाजवादी पार्टी नोएडा महानगर के अध्यक्ष बनाए गए डॉक्टर आश्रय गुप्ता

(आधुनिक समाचार सेवा)

नोएडा। समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता डॉक्टर आश्रय गुप्ता सपा नोएडा महानगर के अध्यक्ष बनाए गए ,

इससे पहले भी डॉक्टर आश्रय गुप्ता 2006 से 2011 तक यूथ ब्रिगेड के उपाध्यक्ष पद पर रहे 2012 से 2017 तक वह नोएडा में यूथ ब्रिगेड के महानगर अध्यक्ष पद पर रहे 2017 से 2019 तक वह यूथ ब्रिगेड प्रदेश सचिव के पद पर रहे 2019 से 2022 तक वह यूथ ब्रिगेड के राष्ट्रीय सचिव पद पर रहे उन्होंने नोएडा में पार्टी को खड़ा करने में अपना भरपूर योगदान दिया वह लगातार पार्टी के लिए मेहनत करते रहे , नवनियुक्त महानगर अध्यक्ष डॉक्टर आश्रय गुप्ता ने कहा कि समाजवादी पार्टी के शीर्ष नेतृत्व ने महानगर अध्यक्ष पद के महत्वपूर्ण जिम्मेवारी सौंप कर उन पर जो विश्वास जताया है उस पर वह वह खरा उतरने के लिए पूरी ईमानदारी और निष्ठा के साथ कार्य करेंगे और पार्टी को मजबूत करने के लिए पुरजोर मेहनत करेंगे, अध्यक्ष पद की घोषणा होने के साथ ही उनके कार्यालय सी 34 सेक्टर 63 में बधाई देने वालों का तांता लग गया बधाई देने वाले मुख्य लोगों में अतुल यादव, अजीम अली जैदी, गौरव कुमार यादव, बबलू पारचा, अमित यादव, सोनू यादव, चमन यादव, सचिन यादव आदि लोग उपस्थित रहे।

देहात पुलिस ने हत्या के प्रयास के आरोपी को गिरफ्तार कर भेजा जेल

(आधुनिक समाचार सेवा)

मैहर। देहात पुलिस ने हत्या के प्रयास के आरोपी को गिरफ्तार कर भेजा जेल आशुतोष गुप्ता(भापुसे) पुलिस अधीक्षक,सतना के निर्देशन एवं लोकेश डाबर अनुविभागीय अधिकारी पुलिस अनुभाग मैहर के मार्गदर्शन मे थाना प्रभारी नादन के नेतृत्व में की गई कार्यवाही दिनांक 07.03.23 को थाना थाना देहात मैं फरियादी शशि तिवारी ने थाने आकर रिपोर्ट किया कि उसका भाई मनोज तिवारी जो पुणे में रहता है अपनी मर्जी से मेरी शादी कहीं तय किया है जबकि मैं वहां शादी नहीं करना चाहती मेरे घरवाले मेरी शादी कहीं और किए हैं मैं वहां शादी करना चाहती हूं इसी बात से नाराज होकर मेरा भाई मुझे जबरन गाली गलौज और मारपीट करता था व जान से मरने की धमकी देता था दिनांक 7.04.23 की बात है हरियाली अपने घर में थी उसी वक्त उसका भाई आया उसके घर के अन्य लोग भी वहां पर थे उनसे शादी के लिए पूछा जब उसने मना किया तो उसने अपने हाथ मिले चाकू से हत्या करने के नियत से फरियादी शशि तिवारी के ऊपर हमला कर दिया जिसे उसकी मां ने धक्का देकर बचाने की नियत से गिरा दिया जिससे उसको चाकू नहीं लगा यदि चाकू लगता तो फरियादिया की मृत्यु हो जाती रिपोर्ट पर थाना देहात में अपराध क्रमांक 294,506,307 आईपीसी का अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया दौरान विवेचना प्रकरण के आरोपी मनोज तिवारी पिता भागवत तिवारी उम्र 36 वर्ष निवासी करतहा हको गिरफ्तार कर आरोपी के कब्जे से घटना में प्रयुक्त चाकू जप्त किया जाकर आरोपी उपरोक्त को पेश न्यायालय किया गया जहां से माननीय न्यायालय द्वारा आरोपी को न्यायिक अभिरक्षा में जेल भेज दिया गया **गिरफ्तार आरोपी** 1. मनोज कुमार तिवारी पिता भागवत तिवारी उम्र 36 वर्ष निवासी करतहा थाना देहात **जप्त मसरूका** 1 घटना में प्रयुक्त चाकू **सराहनीय भूमिका** निरीक्षक पी. सी. कोल प्रधान आरक्षक - रवि सिंह, आरक्षक संजय यादव, अखिलेश की सराहनीय भूमिका रही है ।

सेक्टर 102 में स्वास्थ्य शिविर का आयोजन

(आधुनिक समाचार सेवा)

नोएडा। विश्व स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर सोसाइटी फॉर एनिमल हेल्थ एग्रीकल्चर साइंस एंड ह्यूमैनिटी के द्वारा सेक्टर 102 में स्वास्थ्य शिविर का आयोजन मेट्रो केयर पैथ लैब, जियो ऑनलाइन प्लेटफार्म के आधार पर जांच में भी मेट्रो केयर पैथ लैब द्वारा विशेष छूट दी गई है। डॉक्टर संजीव कुमार वर्मा निदेशक मेट्रो केयर पैथ लैब ने कहा कि यह छूट 30 अप्रैल 2023 तक मेट्रो केयर पैथ लैब द्वारा प्रदान की जाएगी। इस शिविर में हिंदू कॉलेज

कंसल्टेंसी और मौर्या क्लिनिक के सहयोग से किया गया। जियो ऑनलाइन प्लेटफार्म ने अपने विशेषज्ञ डॉक्टरों द्वारा निशुल्क चिकित्सा परामर्श दिया, लगभग 400 मरीजों ने यहां कैंप में आकर अपने स्वास्थ्य का परामर्श लिया और बताए गए लक्षण और परामर्श (दिल्ली विश्वविद्यालय) की छात्र छात्राओं का भी सराहनीय योगदान रहा। हिंदू कॉलेज के छात्र छात्राओं ने वालंटियर के रूप में कार्य करते हुए सर्वे भी मरीजों का कर रहे थे। इस मौके पर सलोनी, स्नेहा,आर्यन, यशस्विनी, चेरिश खेड़ा, रजनीश, राधिका सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

श्री मद भागवत कथा में रूक्मिणी विवाह का वर्णन

(आधुनिक समाचार सेवा)

नोएडा। सेक्टर 55 में चल रही श्रीमद् भागवत ज्ञान कथा के छठवें दिन व्यास श्री महेश चंद्र शास्त्री जी कंस वध व रुकमणी विवाह के प्रसंगों का चित्रण किया। छठवें दिन कथा पूजा यजमान आरपी सिंह और सत्यनारायण गोयल रहे। व्यास जी ने बताया भगवान विष्णु के पृथ्वी लोक में अवतरित होने के प्रमुख कारण थे, जिसमें एक कारण कंस वध भी था। कंस को यह पता था कि उसका वध श्रीकृष्ण के हाथों ही होना निश्चित है। इसलिए उसने बाल्यावस्था में ही श्रीकृष्ण को अनेक बार मरवाने का प्रयास किया, लेकिन हर प्रयास भगवान के सामने असफल साबित होता रहा। 11 वर्ष की अल्प आयु में कंस ने अपने प्रमुख अकरुर के द्वारा मल्ल युद्ध के बहाने कृष्ण, बलराम को मथुरा बुलवाकर शक्तिशाली योद्धा और पागल हाथियों से कुचलवाकर मारने का प्रयास किया, लेकिन वह सभी श्रीकृष्ण और बलराम के हाथों मारे गए और अंत में श्रीकृष्ण ने अपने मामा कंस का वध कर मथुरा नगरी को कंस के अत्याचारों से मुक्ति दिला दी। कंस वध के बाद श्रीकृष्ण ने अपने माता-पिता वसुदेव और देवकी को जहां कारागार से मुक्त

कराया, वही कंस के द्वारा अपने पिता उग्रसेन महाराज भी श्रीकृष्ण ने मुक्त कराकर मथुरा के सिंहासन पर बैठाया।उन्होंने बताया कि रुकमणी जिन्हें माता लक्ष्मी का अवतार माना जाता है। वह विदर्भ साम्राज्य की पुत्री थी, जो विष्णु रूपी श्रीकृष्ण से विवाह करने को इच्छुक थी। लेकिन रुकमणी जी के पिता व भाई इससे सहमत नहीं थे, जिसके चलते उन्होंने रुकमणी के विवाह में जरासंध और शिशुपाल को भी विवाह के लिए आमंत्रित किया था, जैसे ही यह खबर रुकमणी को पता चली तो उन्होंने दूत के माध्यम से अपने दिल की बात श्रीकृष्ण तक पहुंचाई और काफी संघर्ष हुआ युद्ध के बाद अंततः श्री कृष्ण रुकमणी से विवाह करने में सफल रहे। शास्त्री जी ने कहा पाप का अंत करने के लिए भगवान हमेशा पृथ्वी पर आते है। श्रीमती आशा शर्मा (महिला मंडल अध्यक्ष) श्रीमती बीना शर्मा,श्रीमती सुदर्शन अनेजा, भूषण शर्मा,के डी,शर्मा, कुलदीप शर्मा, विजय भारद्वाज, श्रीकांत बंसल,सुरेंद्र सिंह, आरपी सिंह,दीपक अनेजा, दीपक शर्मा, सुभाष निझावन, दिनेश पचौरी,दिनेश बृजवासी , आर के शर्मा, श्रीकांत बंसल, कृष्ण सुंद्रयाल,आर के यादव,रितेश, साथ ही काफी संख्या भक्तगण और सेक्टर के सम्मानित लोग उपस्थित रहे।

भाजपा सरकार के साथ क्यों ना हो महिलाएं - नीता वाजपेई

(आधुनिक समाचार सेवा)

नोएडा। भारतीय जनता पार्टी का 44वां स्थापना दिवस है, सभी देशवासियों को और हम सभी कार्यकर्ताओं को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं। हम लोकसभा चुनाव की बात करें या विधानसभा चुनाव की बात करें भारतीय जनता पार्टी के जीत के पीछे भारतीय महिलाओं का बहुत बड़ा योगदान माना जाता है और माना जाता रहेगा, जिस तरह से भारतीय महिलाओं ने मोदी सरकार को खुले दिल से समर्थन दिया है और आगे भी देती रहेंगी उसी प्रकार मोदी सरकार ने भी महिलाओं के उत्थान और मान-सम्मान के लिए कार्य किया है और कार्य करने के लिए कटिबद्ध है। महिलाओं के लिए भारत सरकार ने बहुत सारी योजनाओं को धरातल पर उतारा है और आगे उतारने के लिए प्रयासरत है। केंद्र सरकार ने महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए अनेकों कार्य किए हैं और करने के लिए रोड मैप भी तैयार किया है। महिलाओं के उत्थान ,सम्मान और समाज में अपनी जगह बनाने आदि के लिए मोदी सरकार ने आगे बढ़कर योजनाओं और कानून के द्वारा महिलाओं का हर संभव सहयोग किया है और महिलाओं को आगे ले जाने के लिए कटिबद्ध है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की सोच बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ ने महिलाओं के मन में मोदी जी के लिए मान सम्मान और बढ़ा दिया। इसको लेकर महिलाओं ने मोदी जी को अपना मान लिया और महिलाओं का मोदी जी के साथ दिल का

रिश्ता बन गया। अगर हम तीन तलाक की बात करें तो इस कानून ने भी भारतीय महिलाओं को एक सम्माननीय स्थान दिलाने में अग्रणी भूमिका निभाई है। हम लिंगानुपात की बात नहीं भूल सकते, जिसका परिणाम यह है की महिलाओं की संख्या में उत्साहवर्धक वृद्धि हुई है। गर्भवती महिलाओं के लिए जननी सुरक्षा योजना ,लाडली लक्ष्मी योजना,फ्री सिलाई मशीन योजना, मुद्रा लोन योजना यह साभी योजनाएं महिलाओं को सशक्त बनाने और उन्हें समाज में एक अहम् स्थान दिलाने मैं बड़ी भूमिका निभा रही है मैं एक बात जरुर कहना चाहूंगी कि महिलाओं को अपनी पहचान खुद से खुद को कराने में मोदी सरकार की अहम भूमिका रही है वैसे तो बहुत सारे कानून, योजनाएं मोदी सरकार ने महिलाओं के लिए बनाए हैं जिससे मैं कुछ योजनाओं के बारे में चुकी हूं। कुछ और मैं बताने की कोशिश कर रही हूं, जिसको धरातल पर उतारने के लिए मोदी सरकार ने एक बहुत बड़ी टीम तैयार की है इन योजनाओं को एक-एक महिला तक पहुंचाने में भाजपा महिला मोर्चा का बहुत बड़ा योगदान रहा है और आगे भी जारी रहेगा। इन योजनाओं में से कुछ योजनाओं का नाम मैं यहां पर बताना चाहूंगी। 1 प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना। 2 प्रधानमंत्री मुद्रा योजना। 3 सपोर्ट टू ट्रेनिंग एंड एंप्लॉयमेंट प्रोग्राम फॉर विमेन.. (एसटीपी)। 4 राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम। 5 प्रधानमंत्री सुकन्या समृद्धि योजना। 6 महिला सम्मान बचत योजना। 7 सरकार इस मार्केटिंग। 8 प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम। 9 समग्र पोषण के लिए प्रधानमंत्री की व्यापक योजना। 10 उद्यम सखी योजना। 11 प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना। 12 प्रधान मंत्री विद्या लक्ष्मी कार्यक्रम। 13 श्रम कार्ड। 14 स्वच्छ भारत अभियान शौचालय योजना। 15 प्रधानमंत्री आवास योजना। आदि कुछ योजनाएं हैं जिनको धरातल पर उतारने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी प्रतिबंध है और इनको धरातल पर उतारने के लिए कार्यक्रम की शुरुआत भी हो चुकी है। जिस मोदी सरकार ने इतनी सारी योजनाएं, इतने सारे कार्यक्रम हम महिलाओं के लिए चलाएं हो और कोशिश की हो कि हर महिला तक इन योजनाओं का लाभ मिले और हर बहन समाज में सम्मान से अपना सर उठा कर पुरुषों के बराबर कदम से कदम मिलाकर चल सके फिर मोदी सरकार के साथ हम महिलाएं खड़ी क्यों ना हो।

सामाजिक न्याय के तहत स्वास्थ्य जांच शिविर

(आधुनिक समाचार सेवा)

नोएडा। भारतीय जनता युवा मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष प्रांशुदत्त द्विवेदी व क्षेत्रीय अध्यक्ष सुखविंदर सोम के आह्वान पर जिलाध्यक्ष राज नागर के नेतृत्व में सामाजिक न्याय के सभी मंडलो के चिकित्सा शिविर कैंपो में आकर करीब 2000 से ज्यादा निवासियों का निशुल्क चिकित्सा जांच किए, वैक्सीन लगायी तथा दवाओ का वितरण किया गया उक्त चिकित्सा जांच शिविर में बच्चों,

सप्ताहठ के तहत जिला गौतमबुद्ध नगर मे मुफ्त स्वास्थ्य जाँच शिविर का गौतमबुद्ध नगर जिले के सभी संगठनात्मक 11 मंडलों पर निशुल्क चिकित्सा जांच शिविरों का आयोजन किया गया। जिसमें कई प्रकार की मुफ्त जाँच जैसे शुगर, बीपी, पल्स, ब्लड ग्रुप, एइच्-2, कोरोना टेस्ट की जाँच कर मुफ्त दवाओं का वितरण किया गया। जिला मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉक्टर सुनील कुमार के नेतृत्व में अनुभवी डाक्टरों की टीम जिले महिलाओं, पुरुषों एवं बुजुर्गो ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया तथा भारतीय जनता पार्टी के 06 अप्रैल को स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में चल रहे सामाजिक न्याय सप्ताह की खूब प्रशंसा की तथा भारतीय जनता पार्टी के शीर्ष नेतृत्व एवं प्रत्येक कार्यकर्ताओ को शुभकामनाएं एवं ढ़ेर सारी बधाई दी । जिला अध्यक्ष राज नागर ने सभी मंडल अध्यक्ष, जिला/मंडल पदाधिकारियों/कार्यकर्ताओं को इस पुण्य कार्य में लगे रहने के लिए बधाई हो शुभकामनाएं दी ।

कलश यात्रा के साथ सेक्टर 82 में श्रीराम कथा का शुभारंभ

(आधुनिक समाचार सेवा)

नोएडा। सेक्टर 82 ईडब्लूएस पाकेट सात में श्रीराम कथा के शुभारंभ पर सुबह 10 बजे से भव्य कलश यात्रा पाकेट सात के सेन्ट्रल पार्क से निकाली गई। बैंड बाजों एवं ढोल

नगाड़ों के साथ झूमते गाते भक्तजन कलश यात्रा में शामिल हुए। महिलाओं ने अपने सिर पर कलश रखकर पूरे सेक्टर में कलश यात्रा निकाली। इस दौरान सेक्टर की सभी महिलाओं,बच्चों एवं पुरुषों ने कलश यात्रा में भाग लिया। सेक्टर 82, 93 होते हुए कलश यात्रा का समापन सेन्ट्रल पार्क स्थित कथा स्थल पर हुआ। कथा व्यास महामंडलेश्वर पंचमानन्द जी महाराज ने श्रीराम कथा का शुभारंभ करते हुए कहा कि जब प्रभु श्रीराम की विशेष कृपा अपने भक्त पर होती है तब हमें रामकथा श्रवण का सौभाग्य प्राप्त होता है। राम कथा सुंदर करतारी, संशय विहग उड़ावन हारी। राम कथा हमारे सभी संशय को दूर करने करने वाली है। भगवान राम का जीवन चरित्र एवं राम कथा हमें जीवन कैसे जिया जाए उसकी प्रेरणा देती है।इस मौके पर राघवेन्द्र दुबे,रवि राघव, देवमणि शुक्ल, एन के सोलंकी,संजय पांडे, अंगद तोमर,अमितेष सिंह, सिया राम,गोरेलाल, संजय शुक्ला, हंस मणि शुक्ला, दीपक तिवारी, एसके तिवारी, राजेश गुप्ता, रमेश वर्मा, अवनीश तिवारी,विष्णु शर्मा, बृज किशोर, हरि शंकर सिंह, सहित सैकड़ों सेक्टर वासी मौजूद रहे।

ईकेवाईसी हेतु पैसे लेने पर कलेक्टर ने की सख्त कार्यवाही, की अपील

(आधुनिक समाचार सेवा)

शहडोल। व्यौहारी से दुर्गेश कुमार गुप्ता कि रिपोर्ट लाडली बहना योजना से संबंधित शिकायत 07652-181 पर शहडोल 07 अप्रैल 2023- कलेक्टर श्रीमती वंदना वैद्य ने जिले वासियों से अपील करते हुए कहा है कि जिले में मुख्यमंत्री लाडली बहना योजना के तहत आवेदन लिए जा रहे हैं इस योजना में सभी पात्र महिलाएं संबंधित ग्राम पंचायत,नगरीय क्षेत्रों के वार्ड प्रभारियो, सीएससी सेंटर,एमपी ऑनलाइन अथवा आयोजित शिवरों में आवेदन कर सकती है, जिससे कोई भी महिलाएं मुख्यमंत्री लाडली बहना योजना से वंचित न रहे। उन्होंने कहा कि यदि कोई भी सीएससी सेंटर एमपी ऑनलाइन या कोई भी व्यक्ति मुख्यमंत्री लाडली बहना योजना अथवा ईकेवाईसी के लिए पैसे की मांग करता है तो तत्काल टोल फ्री नंबर 07652-181 पर कॉल कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि किसी भी प्रकार की शिकायत मिलने पर संबंधितओं के विरुद्ध सख्त कार्यवाही की जाएगी। गौरतलब है कि कलेक्टर श्रीमती वंदना वैद्य ने मुख्यमंत्री लाडली बहना योजना के लिए ईकेवाईसी हेतु पैसे की मांग करने और लेने पर तहसील ब्यौहारी के ग्राम हिरवार निवासी विजय साहू (वीएलई) के विरुद्ध शिकायत मिलने पर आईडी बंद करवाकर सख्त कार्यवाही की है।

एस.आर.एन हॉस्पिटल में जूनियर डॉक्टर और तीमारदारों में मारपीट, डॉक्टर हड़ताल पर; पुलिस तैनात

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रयागराज। स्वरूपरानी नेहरू अस्पताल में गुरुवार देर रात इलाज में लापरवाही के आरोप लगाते हुए तीमारदार और जूनियर डॉक्टरों में बहस के बाद मारपीट हो गई। तीमारदार ने जूनियर डॉक्टर को पीट दिया तो आक्रोशित डॉक्टरों ने मिलकर तीमारदार को भी पीटा। इसके बाद अस्पताल के सभी जूनियर डॉक्टरो ने रात को ही कार्य बहिष्कार का ऐलान किया। आज शुक्रवार को भी जूनियर डाक्टर आरोपियों पर कार्यवाही और सुरक्षा की मांग को लेकर अस्पताल के बाहर काम छोड़ कर बैठे हुए हैं जबकि अंदर काम प्रभावित है। डॉक्टरों का आरोप है कि तीमारदार ने तमंचे के बट से हमला किया है। उसके खिलाफ कार्रवाई होनी चाहिए। रात में मोतीलाल नेहरू मेडिकल कॉलेज के उप प्राचार्य डॉ. वीके पांडेय समेत पुलिस विभाग के उच्चाधिकारी भी मौके पर पहुंच गए। शुक्रवार भोर तक हड़ताल पर रहे। दरअसल, 70 वर्षीय मरीज प्रतापगढ़ जनपद का रहने वाला था। उसे कुछ दिक्कत हुई तो परिवार वाले 26 मार्च को लेकर एसआरएन अस्पताल चले आए। यहां मरीज को भर्ती किया गया था। उसे डिस्चार्ज किया जाना था। ड्रेसिंग करने को लेकर ड्यूटी में रहे जूनियर डॉक्टरों और तीमारदार के बीच विवाद हो गया। डाक्टरों का आरोप है पहले तीमारदार ने हमला पीकिया। इसके बाद जूनियर डॉक्टरों ने भी मिलकर उसे मारा पीटा। अधिकारी तीमारदारों और जूनियर डॉक्टरों के बीच समझौता कराने में जुटे रहे।

इस चाचा चौधरी को बस यही एक काम है कंगना रनोट ने दिया करण जौहर को नया नाम, फिर साधा फिल्म मेकर पर निशाना

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। फिल्म निर्माता विवेक अग्निहोत्री और संपादक-पटकथा लेखक अपूर्व असरानी के बाद, अब

एक्ट्रेस कंगना रनोट ने भी करण जौहर पर निशाना साधा है। उन्होंने करण के एक थ्रोबैक वीडियो पर रिएक्शन दिया है, जिसमें फिल्म मेकर को यह कहते हुए सुना जा सकता है कि वह 2008 में शाह रुख खान स्टारर 'रब ने बना दी जोड़ी' से पहले अनुष्का शर्मा के करियर को पूरी तरह से खत्म करना चाहते थे यह वीडियो, जो अब सोशल मीडिया पर वायरल हो गया है, 2016 में मुंबई में आयोजित 18वें फिल्म फेस्टिवल का है। जहां करण जौहर, अनुष्का शर्मा और ऐश्वर्या राय को लेकर, फिल्म आलोचकों राजीव मसंद और अनुपमा चोपड़ा के बीच चर्चा का हिस्सा थे। जौहर की रोमांटिक ड्रामा ऐ दिल है मुश्किल की रिलीज से एक हफ्ते पहले सेशन आयोजित किया गया था, जिसमें दो अभिनेत्रियों के साथ रणबीर कपूर ने लीड रोल में थे। यह वीडियो, जो अब सोशल मीडिया पर वायरल हो गया है, 2016 में मुंबई में आयोजित 18वें मामी फिल्म समारोह में फिल्म निर्माता, अनुष्का शर्मा और ऐश्वर्या राय के बीच दो फिल्म आलोचकों राजीव मसंद और अनुपमा चोपड़ा के बीच चर्चा का हिस्सा थे। जौहर की रोमांटिक ड्रामा ऐ दिल है मुश्किल की रिलीज से एक सप्ताह पहले सत्र आयोजित किया गया था, जिसमें दो अभिनेत्रियों के साथ रणबीर कपूर ने अभिनय किया था। निशाने पर आए करण जौहर करण ने कहा, मैं पूरी तरह से अनुष्का शर्मा के करियर को खत्म करना चाहता था। क्योंकि जब आदित्य चोपड़ा ने मुझे उनकी तस्वीर दिखाई, तो मैं ऐसा था, 'नहीं, नहीं, पागल है क्या, तुम इसे साइन कर रहे हो, तुम पागल हो कोई जरूरत नहीं है इस अनुष्का शर्मा को साइन करने की। करण ने क्लिप में आगे कहा कि उन्हें लगा कि उन्हें 2010 की रोमांटिक कॉमेडी बैंड बाजा बारात में उनके अभिनय को देखने के बाद माफी मांगनी चाहिए और अभिनेत्री की तारीफ करनी चाहिए, जिसमें उन्होंने रणवीर सिंह के साथ बेहतरीन काम किया।गुरुवार शाम को, कंगना रनोट ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरीज पर करण जौहर को चाचा चौधरी के नाम से पुकारा, जो कि प्राण कुमार शर्मा द्वारा निर्मित लोकप्रिय कॉमिक बुक कैरेक्टर है।कंगना ने लिखा, इस चाचा चौधरी को बस यही एक काम है। कंगना इससे पहले भी कई मौकों पर फिल्म निर्माता को 'मूवी माफिया' और 'भाई-भतीजावाद का झंडाबरदार' कहकर आड़े हाथ ले चुकी हैं।

2023 में गर्दा उड़ाएंगी हिंदी में रिलीज हो रही ये तमिल फिल्में, बॉलीवुड की डूबेगी नैया

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। साउथ की फिल्मों का डंका पूरे देश में बज रहा है।

साल 2022 में हिंदी ऑडियंस के बीच बॉलीवुड की बजाय साउथ की फिल्मों का जादू सिर चढ़कर बोला। केजीएफ 2, आरआरआर, पुष्पा द राइज या पोन्नियिन सेल्वन हो, साउथ की फिल्मों ने बीते साल बॉक्स ऑफिस पर कब्जा जमाए रखा। दर्शकों को अब साल 2023 में भी साउथ की मास एंटरटेनर का इंतजार है। अब तक तेलुगु और कन्नड़ फिल्मों ने ज्यादा चर्चा बटोरी है, लेकिन अब तमिल की भी कई फिल्में रिलीज होने वाली है, जो हिंदी में भी देखने को मिलेंगी। आइए जानते हैं इस साल कौन-कौन सी मच अवेटेड तमिल फिल्में हिंदी में भी रिलीज होंगी मणि रत्नम की पोन्नियिन सेल्वन-1 ने बीते साल दुनियाभर में तरीफे लूटी। फिल्म ने वर्ल्डवाइड 500 करोड़ से ज्यादा का कलेक्शन किया। अब 28 अप्रैल को फिल्म का दूसरा पार्ट आने वाला है। पोन्नियिन सेल्वन- 2 में चियान विक्रम, जयम रवि, कार्थी और ऐश्वर्या राय बच्चन मुख्य किरदारों में नजर आएंगे। तमिल स्टार थलापति विजय की फिल्म लियो लगातार चर्चा में बनी हुई है। हाल ही में फिल्म का रोंगटे खड़े कर देने वाला ट्रेलर जारी किया गया था। फिल्म में विजय के साथ तृष्णा कृष्णन, प्रिया आनंद और अर्जुन सरजा जैसे स्टार्स नजर आएंगे। फिल्म को लोकेश कनागराज डायरेक्टर कर रहे हैं, जबकि सेवन स्क्रीन स्टूडियो प्रोड्यूस कर रहा है। यह एक पैन इंडिया फिल्म है जिसमें संजय दत्त भी दिखाई देने वाले हैं। रिपोर्ट्स के अनुसार, संजय इस फिल्म में एक खूंखार विलेन के किरदार में नजर आ सकते हैं। साउथ सुपरस्टार रजनीकांत की आगामी फिल्म जेलर भी साल 2023 की बहुप्रतीक्षित फिल्मों में से एक है। थलाइवा के फैंस बेसब्री से फिल्म की रिलीज का इंतजार कर रहे हैं। जेलर का डायरेक्शन नेल्सन दिलीपकुमार कर रहे हैं। फिल्म की कहानी का बात करें तो ये एक डार्क कॉमिक थ्रिलर है। जेलर में रजनीकांत मुथुवेल पांडियन नामक जेल अधिकारी उर्फ जेलर के किरदार में नजर आएंगे। जेलर में रजनीकांत के साथ मलयालम सुपरस्टार मोहनलाल, कन्नड़ सुपरस्टार शिव राजकुमार भी अहम रोल में हैं। इनके अलावा राम्या कृष्णन, योगी बाबू, वसंत रवि, विनायकन भी फिल्म में नजर आएंगे। कमल हासन की इस फिल्म के पहले पार्ट की सफलता के बाद मेकर्स अब दूसरा भाग लेकर आ रहे हैं। फिल्म में कमल हासन के साथ रकुल प्रीत सिंह लीड रोल में हैं। इंडियन-2 का डायरेक्शन एस शंकर कर रहे हैं। फिल्म की कहानी एक ऐसे शख्स के बारे में है जो सरकारी सिस्टम में करप्ट अधिकारियों को सबक सिखाता है। अभी फिल्म की रिलीज डेट घोषित नहीं की गई है।

अमीषा पटेल के खिलाफ कोर्ट ने जारी किया वारंट धोखाधड़ी के आरोपों में फंसी 'गदर 2' एक्ट्रेस

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। अमीषा पटेल अपनी आगामी फिल्म गदर 2 को लेकर चर्चा में बनी हुई हैं। लंबे वक्त बाद एक्ट्रेस सिल्वर स्क्रीन पर कमबैक करने वाली हैं। इस बीच रांची सिविल कोर्ट ने एक्ट्रेस के खिलाफ वारंट जारी कर दिया है। अमीषा पटेल से जुड़ा ये पूरा मामला चेक बाउंस और धोखाधड़ी का है। एक्ट्रेस कुछ समय पहले भी इस केस को लेकर चर्चा में आई थीं, लेकिन अब बात बढ़ते हुए नजर आ रही है, क्योंकि गुरुवार को कोर्ट ने एक्ट्रेस और उनके बिजनेस पार्टनर के खिलाफ वारंट जारी कर दिया। अमीषा के रवैये ने कोर्ट को किया नाराज इंडिया टुडे की खबर के अनुसार, तारीख के बावजूद अमीषा और उनके वकील कोर्ट नहीं पहुंचे। अभिनेत्री के इस रवैये पर कोर्ट ने अपनी नाराजगी जताई। अब केस की

अगली सुनवाई 15 अप्रैल को होगी। देखने वाली बात है कि क्या वारंट जारी होने के बाद अमीषा इस बार कोर्ट पहुंचती हैं या नहीं। ढाई करोड़ गबन करने का आरोप अमीषा पटेल पर इस मामले में लगभग ढाई करोड़ का गबन करने का आरोप है। रांची जिले के हरमू निवासी अजय कुमार सिंह ने अमीषा और उनके बिजनेस पार्टनर के खिलाफ धोखाधड़ी का केस दर्ज कराया था।शिकायत के अनुसार, अमीषा ने देसी मैजिक नाम की फिल्म का ऑफर देते हुए अजय कुमार सिंह को पैसे लगाने का ऑफर दिया था। इसवेज बाद शिकायतकर्ता ने लगभग ढाई करोड़ रुपये एक्ट्रेस के खाते में ट्रांसफर करा दिए। फिल्म के नाम पर ऐंठे पैसे फिल्म की शूटिंग 2013 में स्टार्ट होनी थी, जो कभी शुरू नहीं हुई। जब अजय कुमार सिंह ने अपने पैसे वापस मांगे तो अमीषा और उनके मैनेजर ने उन्हें भरोसा दिलाया कि फिल्म पूरी होने के बाद वे ब्याज समेत उनके पैसे वापस कर देंगे।अमीषा पटेल ने काफी समय तक टालने के बाद अक्टूबर 2018 में अजय कुमार को ढाई करोड़ और 50 लाख के दो चेक दिए, जो बाउंस हो गए।

डीप नेक गाउन में लगीं मॉडर्न प्रिंसेस डायमंड नेकलेस पर टिकी लोगों की निगाहें

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। बॉलीवुड एक्ट्रेस जाह्नवी कपूर आज फिल्म इंडस्ट्री का एक बड़ा नाम हैं। फिल्म धड़क से

बॉलीवुड में डेब्यू करने वाली जाह्नवी आज कई फिल्मों में अपनी एक्टिंग का दम दिखा चुकी हैं। दर्शकों ने भी जाह्नवी की एक्टिंग को खूब पसंद किया है। वह एक्टिंग के साथ अपनी बोल्डनेस को लेकर सुर्खियों में रहती हैं। जाह्नवी सोशल मीडिया पर भी काफी एक्टिव हैं। वह अक्सर अपनी हॉट एंड बोल्ड तस्वीरें पोस्ट करती रहती हैं। इसी बीच जाह्नवी ने अपनी लेटेस्ट तस्वीरों को पोस्ट कर फैंस का दिन बना दिया है। इन फोटोज में उनकी खूबसूरती बस देखते ही बन रही है। इन तस्वीरों को फैंस काफी पसंद कर रहे हैं। जाह्नवी ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर अपनी लेटेस्ट फोटोशूट की तस्वीरें शेयर की हैं। इन तस्वीरों में वह किसी मॉडर्न प्रिंसेस से कम नहीं लग रही हैं। फोटोज में आप देख सकते हैं कि जाह्नवी ने बीज कलर का गाउन पहना है, जिसका ने हद से ज्यादा डीप है। इस गाउन के साथ जाह्नवी ने डायमंड का हैवी ने नेकलेस पहना है जो उनके लुक को और भी एलीगेंट बना रहा है। ये गाउन एक्ट्रेस पर काफी सूट कर रहा है। जाह्नवी कपूर इस गाउन को पहन कर अलग-अलग अंदाज में किलर पोज देती नजर आ रही हैं। वह कभी कैमरे के सामने कभी सोफे पर बैठकर तो कभी खड़े होकर ग्लैमरस अंदाज दिखाती नजर आ रही हैं।जाह्नवी की बात करें तो उन्होंने लाइट मेकअप किया है। इसके साथ एक्ट्रेस ने मरून रंग की डार्क शेड लिपस्टिक लगाई है। वहीं, इसके साथ ही जाह्नवी ने अपने बालों को टाइट जूड़ा में बांधा है, जो उनके लुक को चार चांद लगा रहा है। इन तस्वीरें को फैंस काफी पसंद कर रहे हैं।

शालीन भनोट ने मारा ताना वीडियो शेयर कर बोले- 'गालियों वाले रैप' गाने से अच्छा है, भजन सुना करा

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। बिग बॉस 16 जीतने के बाद भी 'बस्ती के हस्ती' यानी एमसी स्टैन पर लोग निशाना साधने का कोई मौका नहीं छोड़

रहे हैं। ताजा अपडेट शालीन भनोट से जुड़ा हुआ है। उन्होंने अपने सोशल मीडिया पेज के जरिए रैपर को आड़े हाथों लिया। शालीन ने हनुमान जयंती के मौके पर हनुमान चालीसा का जाप करते हुए खुद की एक क्लिप शेयर की और 'गालियों वाले रैप' को लेकर एमसी स्टैन को ताना भी मारा। गुरुवार को, शालीन भनोट ने अपने इंस्टाग्राम हैंडल पर एक वीडियो शेयर किया। इस वीडियो में शालीन अपने कार के अंदर बैठे हुए हैं और हनुमान चालीसा का पाठ कर रहे हैं। इस दौरान उन्होंने लाइट ग्रीन कलर की टी-शर्ट और व्हाइट कैप लगाई हुई है। शालीन दोहे का उच्चारण ऐसे ही कर रहे हैं जैसे कोई रैप गाता है। कैप्शन में शालीन ने लिखा, ङ्गसंगीत हम सभी को जोड़ता है ष्ठ और इस दिन, मैं बस इतना कह सकता हूं कि गालियों से भरा रैप चुनने के बजाय सही चुनाव करें, क्यों न भजन सुनें जो आज के समय में फिर से बनाए गए और पुनर्जीवित किए गए हैं। स्वाद... संगीत और इसके साथ परम शक्ति और सकारात्मकता के प्रति विश्वास शालीन के इस पोस्ट को एमसी स्टैन से जोड़ कर देखा जा रहा है।

आजादी और बंटवारे के बाद सिनेमा के गोल्डन एरा की सुनहरी और स्याह तस्वीर है 'जुबली'

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। भारतीय सिनेमा में आजादी की लड़ाई और बंटवारे की ऐतिहासिक घटनाओं के इर्द-गिर्द कई फिल्मों की कहानियों को रचा और गढ़ा गया है। आजादी के 75वें साल में ऑस्कर लाने वाली तेलुगु फिल्म आरआरआर की कहानी भी ब्रिटिश राज और अंग्रेजी हुकूमत से टकराव पर आधारित थी।बंटवारे का दर्द भी कई कहानियों में समेटा गया। मगर, देश जब आजादी की दहलीज पर खड़ा था तो इन कहानियों को पर्दे पर उतारने वाली फिल्म इंडस्ट्री के अंदर क्या चल रहा था, इसकी सुनहरी और स्याह झलक दिखाती है अमेजन प्राइम वीडियो की ताजा सीरीज जुबली।इस सीरीज को हिंदी सिनेमा के क्रमिक विकास की केस स्टडी के तौर पर भी देखा जा सकता है, क्योंकि कुछ किरदार और घटनाक्रम वास्तविकता के बेहद करीब लगते हैं। आजादी के बाद पचास और साठ का दशक भारतीय सिनेमा का स्वर्ण युग इसलिए भी कहा जाता है, क्योंकि इस दौर में सिनेमा ने अंगड़ाई लेना शुरू किया था।पश्चिमी सिनेमा के प्रभाव, फिल्मों में तकनीक के विकास, देश के बदलते मिजाज और नयी चुनौतियों ने फिल्मों से अपेक्षाओं को बढ़ा दिया था, क्योंकि तब इसे जनता से संवाद का सबसे असरदार और सीधा माध्यम माना जाता था। देश को दिशा देने में जुटे राजनेता फिल्मों के जरिए अपने विचारों को जनता तक पहुंचाना चाहते थे।जुबली हिंदी सिनमा के इसी ट्रांसफॉर्मेशन को रोमांचक शैली में पेश करने के साथ इसके स्याह पक्ष को भी बिना

लागलपेट उजागर करती है, जिसमें साजिशें, मौकापरस्ती, पैसे की हवस, धोखा, मक्कारी और सफलता के लिए किसी भी हद से गुजरने की चाहत नजर आती है।कहानी 10 एपिसोड्स में फैली है। पहले पांच एपिसोड्स स्ट्रीम कर दिये गये हैं। एक एपिसोड की अवधि लगभग एक घंटा है। आगे के एपिसोड्स 14 अप्रैल को स्ट्रीम किये जाएंगे। मगर, पहले पांच एपिसोड्स ने जुबली के लिए स्टेज सेट कर दिया है।क्या है जुबली की कहानी कहानी 13 जुलाई 1947 में शुरू होती है। आजादी की तारीख से लगभग महीनाभर पहले। इंडस्ट्री की सबसे बड़ी फिल्म निर्माण कम्पनी रॉय स्टूडियोज कर्ज में डूबी है। कम्पनी को एक ऐसे सुपरस्टार मदन कुमार को क्रिएट करने की जरूरत है, जिसके लिए जनता की दीवानगी दौलत का अम्बार लगा दे। ऑडिशन के बाद कम्पनी के मालिक श्रीकांत रॉय (प्रोसेनजित चटर्जी) की तलाश जमशेद खान (नंदीश संधू) पर खत्म होती है। अखबार में खबर छपवा दी जाती है कि स्टूडियो की अगली फिल्म संघर्ष से नया स्टार मदन कुमार (नंदीश) लॉन्च होगा। उधर, जमशेद खान लखनऊ में श्रीकांत की पत्नी और स्टूडियो की आधी मालकिन सुमित्रा कुमार (अदिति राव हैदरी) के साथ कराची भागने की योजना बना रहा है। सुमित्रा खुद भी सुपरस्टार है, मगर श्रीकांत की बेवफाई और दूसरी स्त्रियों के प्रति आसक्ति ने सुमित्रा को बागी बना दिया है।श्रीकांत को जमशेद खान और सुमित्रा के प्रेम प्रसंग से कोई एतराज नहीं है, क्योंकि इन दोनों पर उसकी फिल्म संघर्ष और स्टूडियो का भविष्य टिका है। जमशेद थिएटर का अभिनेता है और फिल्म उसकी प्राथमिकता नहीं है। श्रीकांत जल्द से जल्द जमशेद को मदन कुमार बनाकर फिल्म लॉन्च करना चाहता है। वो अपने विश्वासपात्र स्टूडियो कर्मी बिनोद दास (अपारशक्ति खुराना) को जमशेद और सुमित्रा को बुलाने के लिए भेजता है। बिनोद, सुंदर नाम का फैन बनकर जमशेद से मिलता है और उसे फिल्म करने के लिए कन्विंस करने की कोशिश करता है। इस बीच लखनऊ में दंगे शुरू हो जाते हैं और इनमें जमशेद मारा जाता है। बिनोद उसे बचा सकता था, मगर खुद मदन कुमार बनने की ख्वाहिश दिल में दबी होने के कारण पीछे हट जाता है। मदन कुमार का मारा जाना रॉय के लिए बड़ा झटका था। उसे बिनोद की कारगुजारी का पता चल जाता है, मगर एक नाटकीय घटनाक्रम के बाद बिनोद की संवाद अदायगी देख वो उसे मदन कुमार बनाकर लॉन्च करने का फैसला करता है। फाइनेंसर शमशेर वालिया (राम कपूर) इसका पुरजोर विरोध करता है, मगर रॉय किसी की नहीं सुनता। सुमित्रा कुमारी के साथ मदन की लांचिंग होती है। फिल्म सुपरहिट हो जाती है और बिनोद सुपरस्टार मदन कुमार बनकर स्टाफ क्वार्टर से स्टार क्वार्टर में 500 रुपये महीने की तनख्वाह पर शिफ्ट हो जाता है। इस कहानी में एक प्रमुख पात्र है जय खन्ना (सिद्धांत गुप्ता), जो जमशेद का दोस्त है। उसके पिता नारायण खन्ना (अरुण गोविल) कराची में मशहूर थिएटर कम्पनी के मालिक हैं। जमशेद फिल्में छोड़कर इसी थिएटर कम्पनी से जुड़ने वाला होता है। उधर, बंटवारे के बाद जय का परिवार मुंबई के सायन इलाके में बने रिफ्यूजी कैम्प में शरण लेता है। आजीविका के लिए हाथ-पैर मारते-मारते जय अपनी लिखी स्क्रिप्ट पर फिल्म बनाना चाहता है। कुछ घटनाक्रमों के बाद वो पहले से परिचित मदन कुमार को फिल्म में काम करने के लिए मना लेता है।

'दसरा' के आगे निकला अजय देवगन की फिल्म भोला का तेल अब तक कमाए इतने करोड़

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। 30 मार्च को सिनेमाघरों में दस्तक देने वाली अजय देवगन की फिल्म 'भोला' को सुपरस्टार

नानी की फिल्म से कड़ी टक्कर मिल रही है। दोनों फिल्में एक ही दिन रिलीज हुई हैं। 'दृश्यम 2' के बाद यह अजय देवगन की अगली फिल्म है, जिससे दर्शकों को काफी उम्मीदें थीं। मगर जिस रफ्तार से फिल्म कमाई कर रही है, उसे देख यही लगता है कि 'भोला' दर्शकों की उम्मीदों पर धीमी गति से खरी उतर रही है। 'भोला' फिल्म ने घरेलू बॉक्स ऑफिस पर 50 करोड़ का आंकड़ा पार कर लिया है। अगर वर्ल्डवाइड कमाई की बात करें, तो भी मूवी 100 करोड़ का कलेक्शन करने से बहुत पीछे है। गुरुवार को को फिल्म का कलेक्शन 11.2 रहा, जो कि किसी भी इंडियन फिल्म के लिए ठीकठाक आंकड़ा है। इसके पहले वीकेंड पर भोला ने 40 करोड़ का नेट कलेक्शन किया था। हालांकि, सैकनिल्क की रिपोर्ट के अनुसार, कमाई में उतार चढ़ाव के बीच भोला मूवी की कमाई में बुधवार तक 31 प्रतिशत की गिरावट देखी गई। दुनियाभर में की इतनी कमाई अजय देवगन स्टारर 'भोला' ने दुनियाभर में 74 करोड़ के आसपास का कलेक्शन किया है। इस फिल्म को अजय देवगन ने ही डायरेक्ट किया है। इससे पहले उन्होंने 'यू मी और हम', 'रनवे 34' और 'शिवाय' का भी निर्देशन किया है। इन तीनों फिल्में में से एक भी बॉक्स ऑफिस पर अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाई। सलमान खान की 'किसी का भाई किसी की जान' रिलीज होने तक अजय देवगन की फिल्म को टिकट विंडो पर क्लियर रास्ता मिल सकता है।नवीन बाबू घन्टा उर्फ नानी की फिल्म 'दसरा' ने दुनियाभर में छह दिनों में 100 करोड़ का आंकड़ा पार कर लिया, और अब भी इसका कलेक्शन अच्छा जा रहा है। खुद सुपरस्टार नानी ने ग्लोबल लेवल पर 100 करोड़ पार होने की जानकारी शेयर की। 'दसरा' अभिनेता नानी की पहली पैन इंडिया फिल्म है, जिसमें उनकी जोड़ी कीर्ति सुरेश के साथ बनी है।

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक डा0 दीपक अरोरा द्वारा रामा प्रिन्टर्स 53/25/1 ए बेली रोड न्यू कटरा प्रयागराज (उ.प्र.) 211002 से मुद्रित एवं सी-41 यूपी एसआईडीसी औद्योगिक क्षेत्र नैनी प्रयागराज। (उ.प्र.) 211010 से प्रकाशित।
सम्पादक/प्रकाशक
डा0 पुनीत अरोरा
मो0न0 09415608710
RNI No. UPHIN/2015/63398
website:www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगे।